RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

आपकी मुस्कान आपके चेहरे पर भगवान के हस्ताक्षर हैं, उसे अपने आंसुओं से धुलने या क्रोध से मिटने ना दें।

बीके शिवानी

वर्ष-04, अंक - 34 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 26 मई 2022 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

ज्ञानवापी मस्जिद के बाद जामा मस्जिद को लेकर गहराया विवाद

भोपाल। ज्ञानवापी मस्जिद के बाद भोपाल की जामा मस्जिद के पुरातत्व सर्वेक्षण की मांग को लेकर अब संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर ने कहा कि, अगर कोई मांग कर रहा है तो उसका सर्वे जरूरी है। वहीं, सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ने इस मुद्दे पर फिर दोहराया है कि अगर सत्य बोलना गलत है तो वे ऐसी गलती करती रहेंगी।

सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने कहा कि, हिंदू कभी भी किसी अन्य धर्म के पूजा स्थल या आध्यामिक स्थलों

को तोड़कर मंदिर नहीं बनाता है। यह हमारे शास्त्रों में भी लिखा है। जो आक्रांता भारत आए थे उन्होंने मंदिरों को तोड़कर मस्जिद बनाई थी। यह सत्य कोई झुठला नहीं सकता है। ज्ञानवापी मस्जिद में जो सत्य प्रकट हो रहे हैं उसमें हर सनातनी को इकट्ठा होकर समर्थन करना चाहिए। सत्य का साथ देना चाहिए।

ज्ञानवापी मस्जिद के पुरातत्व सर्वेक्षण की तरह भोपाल की जामा मस्जिद के पुरातत्व सर्वेक्षण की मांग उठने पर संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर ने कहा कि, अगर कोई मांग करता है तो उसका परीक्षण करेंगे। मांग पर सर्वे भी कराया जाएगा। ज्ञानवापी मस्जिद में भी जो सच्चाई सामने आ रही है, उस सत्य को क्रियान्वित होना चाहिए।

नाचे कूदे वांदरी खीर खाए फकीर

दिल्ली तक जाने वाला यह कैसा अमृत सरोवर...?

माही की गूंज। संजय भटेवरा

झाबुआ/थांदला। आदिवासी नेता स्वर्गीय दिलीप सिंह भूरिया का जिला प्रशासन पर हमेशा से यही तंज रहता था कि, ÷नाचे कूदे वांदरी खीर खाए फकीर÷ ये कहावत और कई मौकों पर सार्वजनिक मंचों से कहते रहे हैं।

वर्तमान में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और देशभर में कई आयोजन पूरे वर्ष भर आयोजित किए जा रहे हैं। वही मध्य प्रदेष में विकास के नाम पर अमृत सरोवर के अंतर्गत तालाब का निर्माण किया जा रहा है। उक्त तालाब पंचायत द्वारा बनाए जाने वाले की लागत 11 लाख 44 हजार है तो आरईएस विभाग द्वारा बनाए जाने वाले तालाब की लागत 19 लाख 45 हजार है। उसी कड़ी में जिले में अमृत सरोवर बनाने का लक्ष्य दिया गया है जिसमें जिले में 75 अमृत सरोवर बनना है और दिनांक 24-5-2022 को प्रदेश के पहले अमृत सरोवर का लोकार्पण क्षेत्र के सांसद गुमान सिंह डामोर ने जिला प्रशासन की उपस्थिति में किया।

इस कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी वर्चुवली शामिल होने वाले थे लेकिन वह कुछ अन्य कारणों से शामिल नहीं हुए। ऐसा लोकार्पण कार्यक्रम में शामिल जिला जनसंपर्क अधिकारी द्वारा कहा गया।

सांसद गुमान सिंह डामोर ने अपने उद्बोधन में इसे प्रदेश का गौरव बतलाया और रत्नी का नाम प्रदेश तथा देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक यह समाचार जाएगे की बात कही। लेकिन माही की

8 वें का कार्य करने वाली जीआर इंफ्रा प्रो. लि. कम्पनी की मशीनो से जिला प्रशासन के निर्देशन में फ्री में प्रदेश में प्रथम अमृत सरोवर तालाब निर्माण करवाकर, लोकार्पण कर जिला प्रशासन व सत्ता के नुमाइन्दे मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक लुट रहे अपनी वाहवाही।

गूंज की पड़ताल में इस तालाब अमृत सरोवर के निर्माण को लेकर कुछ अलग ही कहानी सामने आई है।

जिसमें इस अमृत सरोवर तालाब को मनरेगा व जनभागीदारी से बनाना बताया गया है और लागत 11 लाख 44 हजार रूपये तथा जनभागीदारी मे 3 लाख से अधिक की राशि बतलायी जा रही है। लेकिन हकीकत में इस अमृत सरोवर तालाब का निर्माण मनरेगा के अंतर्गत किया ही नहीं गया है। इस तालाब का निर्माण 8लेन हाईवे की कंपनी द्वारा मशीनों से किया गया है। पड़ताल में यह तथ्य सामने आया है कि, जनपद क्षेत्र में बनने वाले सरोवर में से दो सरोवर बनाने का काम 8लेन कंपनी को थांदला अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) ने अनाधिकृत रूप से दिया था। जिसमें से एक रत्नी का अमृत सरोवर तालाब व दूसरा मोरझरी का अमृत सरोवर तालाब कंपनी की मशीनों द्वारा अधिकारी के निर्देष पर फ्री में बनाया गया। रत्नी का सरोवर भी पूर्ण रूप से कंपनी की मशीनों द्वारा फ्री में बनाया गया है। लेकिन जिला प्रशासन लोकार्पण के साथ अपनी पीठ स्वयं ही थपथपा रहा है।

मुख्यमंत्री की वीडियो कांफ्रेंसिंग में भ्रष्टाचार को लेकर सार्वजनिक रूप से डांट खा चुके जिले के कलेक्टर सोमेश मिश्रा अपनी छवि सुधारने के लिए कुछ ना कुछ नवाचार कर मुख्यमंत्री के गुडलिस्ट में शामिल होने का प्रयास कर रहे हैं और इसके लिए भी लक्ष्य से ज्यादा कार्य करने का दावा कर रहे हैं। रत्नी का अमृत सरोवर उसी का एक हिस्सा है। बताया जा रहा है कि, अमृत सरोवर में झाबुआ जिले को 75 सरोवर बनाने का लक्ष्य दिया गया है, लेकिन कलेक्टर ने मैदानी अमले को 111 सरोवर बनाने का लक्ष्य दिया है।

क्या इसी प्रकार यह लक्ष्य साबित होगा कि इसकी टोपी उसको पहना दी जाए। वही सांसद महोदय भी पूरे मामले में जानकर भी अनभिज्ञ बने हैं और जिले में मनरेगा की योजना प्रसारित कर रहे हैं। वह वास्तव में मनरेगा का कार्य है की नहीं, इस कार्य से यह महज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि, जब पूरा कार्य मशीनों से 8लाइन बनाने वाली कंपनी ने फ्री में बनाया है, तो भी शासन द्वारा तय 11.44 लाख रुपए व जनभागीदारी में आए रूपये कहां गए....? प्रशासनिक दबाव के साथ दूसरे के द्वारा किए गए कार्य में श्रेय लेने की होड़ मची है।

वही उक्त योजना को भी जिला प्रशासन व सत्ता के नुमाईदो ने भ्रष्टाचार की भेट चढ़ाकर प्रदेश में सर्वप्रथम अमृत सरोवर का निर्माण का सेहरा बाध पुरे प्रशासनिक अमले के साथ सांसद द्वारा लोकार्पण कर मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री को हरा-हरा दिखा रहे है। यहा दिवंगत आदिवासी नेता दिलीप सिंह भुरिया की कहे जाने वाली कहावत ÷नाचे कूदे वांदरी खीर खाए फकीर÷ चरितार्थ हो रही है।

इस संबध में 8लेन का कार्य करने वाली जीआर इंफ्रा प्रो. कंपनी के लार्जनिंग कर्मचारी अजय मनावत कहते है, कलेक्टर के निर्देश पर हमें थांदला क्षेत्र में 8लेन के आसपास क्षेत्र में 15-17 तालाब बनने है जिसमे से 2 अमृत सरोवर तालाब का चयन कर अधिकारी ने बनाने के निर्देश हमे दिए थे, जिसपर हमने खवासा के रत्नी व परवलिया के मोरझरी में 2 तालाब का चयन कर कंपनी की मशीने व ट्रेक्टर के साथ कंपनी की और से कार्य किया गया है, ये सही है।

कांग्रेस के चिंतन शिविर के बाद जीतू पटवारी की यह पेशकश

भोपाल। मध्य प्रदेश में कांग्रेस के उदयपुर चिंतन शिविर के फैसलों पर अमल के लिए अनुसूचित जनजाति विभाग के बाद अब मीडिया विभाग के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने भी एक पद छोड़ने की पेशकश कर दी है। जीतू पटवारी ने यह पेशकश सोशल मीडिया पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ से की है जिससे दूसरे साथी को मौका मिल सके। कुछ समय पहले पीसीसी के एक अन्य कार्यकारी अध्यक्ष सुरेंद्र चौधरी को भी अनुसूचित जाति विभाग के अध्यक्ष पद से हटाया जा चुका है।

उदयपुर चिंतन शिविर में एक व्यक्ति एक पद, पांच साल से एक पद पर बैठे पदाधिकारियों के स्थान दूसरे नेता को मौका देने सहित कुछ अन्य फैसले लिए गए थे जिसके तहत मध्य प्रदेश में अमल हो रहा है। ट्विटर पर पूर्व मंत्री और विधायक जीतू पटवारी ने प्रदेश कांग्रेस के एक पद को छोड़ने की पेशकश की पोस्ट डाली है। इसमें उन्होंने लिखा है कि, वे कार्यकारी अध्यक्ष हैं और मीडिया विभाग का अध्यक्ष पद भी उनके पास है। इसलिए वे मीडिया विभाग के अध्यक्ष पद को छोड़ना चाहते हैं।

इसकी जिम्मेदारी दूसरे किसी साथी को दे दी जाए।

गौरतलब है कि, मंगलवार को आदिवासी विभाग के अध्यक्ष पद पर पूर्व मंत्री और विधायक ओमकार सिंह मरकाम की नियुक्ति की गई थी। इस पद पर अभी तक अजय शाह काम कर रहे थे जिनकी नियुक्ति 2015 में हुई थी। चिंतन शिविर में पांच वर्ष से ज्यादा समय से एक पद पर काम करने रहे लोगों को हटाए जाने का फैसला हुआ था। अजय शाह ने हटाए जाने के पहले ही 15 मई को पद से इस्तीफा देते हुए अन्य किसी आदिवासी समाज के नेता की नियुक्ति की पेशकश की थी। इसके बाद मंगलवार को उनके स्थान पर मरकाम और तीन अन्य उपाध्यक्षों की नियुक्ति कर दी गई थी। इसी तरह दो पदों पर काम कर रहे पीसीसी के एक अन्य कार्यकारी अध्यक्ष सुरेंद्र चौधरी को पिछले दिनों हटा दिया गया था। चौधरी अनुसूचित जाति विभाग के अध्यक्ष थे और उनके स्थान पर प्रदीप अहिरवार की नियुक्ति की जा चुकी है।

दोहरा हत्याकांडः डेढ वर्षीय मासूम के साथ मां का गला घोंटकर हत्या, पति दूर खेत में बंधा मिला

जांच में जुटी पुलिस, पति पर ही हत्या का शक

माही की गूंज, उज्जैन/बड़नगर

उज्जैन जिले के बडनगर थाना अंतर्गत जलोदिया गांव के जंगल में बने मकान में सोमवार रात को महिला संगीता बाई (23) और उसके डेढ वर्षीय पुत्र मनोज की रस्सी से गला घोट कर निर्मम हत्या कर दी गई। महिला का पति घटनास्थल से कुछ मीटर दूर हाथ बंधा पड़ा मिला। पुलिस ने दोनों शव बरामद कर पोस्टमार्टम करवाया है। पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज किया। फिलहाल पुलिस को कोई सुराग नही मिला है, लेकिन पुलिस के शक की सुई महिला के पति की और इशारा कर रही है। पूरे मामले की हर पहलू से जांच की जा रही है। जिले के बड़नगर तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर जलोदिया गांव में सोमवार-मंगलवार मध्यरात्री महिला एवं बच्चे के हत्या को अंजाम दिया गया है। महिला के पति देवाजी ने पुलिस को जानकारी देते हुए बताया कि, रात में 4-5 अज्ञात लोग, खेत पर बने मकान में आए और उसे रस्सी से बांध दिया। मेरे बच्चे और पत्नी का गला घोंट हत्या कर दी। देवाजी रतलाम जिले के तलाई खेड़ा का रहने वाला है व अपनी पत्नी बच्चे के साथ 20 दिन पहले जलोदिया में जमीन मालिक राधेश्याम यादव के खेत पर हली का काम करने आया था। हली देवा को जमीन मालिक ने खेत पर बने मकान में एक कमरा रहने के लिए दिया था। दोहरी हत्या के इस मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच में जुटी है। घटनास्थल से करीब 30 मीटर दूरी पर सीसीटीवी केमरा लगा है लेकिन उसमें घटनास्थल पुरी तरह से कवरेज नहीं हो पाई है।

खेत मालिक ने पुलिस को सूचना दी

पुलिस के अनुसार मंगलवार सुबह जमीन मालिक राधेश्याम का पुत्र कन्हैयालाल खेत पर पहुंचा था। यहां मवेशी घर में सफाई नहीं देख वह हली के कमरे की और गया तो वहां उसने महिला एवं उसे पुत्र को मरा हुआ देखा। हली देवाजी उसे कहीं नजर नहीं आने पर उसने परिवार एवं गांव के चौकीदार को इसकी जानकारी दी। सूचना पर बडनगर पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर महिला एवं उसके बच्चे का शव बरामद किया। पुलिस के द्वारा आस-पास तलाश करने पर घटनास्थल से करीब 20 मीटर दूर देवाजी अर्द्ध बेहोशी की स्थिति में हाथ पीछे की और बंधे हुए घास में मिला।

मौके पर जांच के लिए पहुची, एफएसएल और घटनास्थल पर पुलिस अधीक्षक सत्येन्द्र शुक्ल ने मुआयना किया। एफएसएल टीम की जांच के लिए पहुंची, वैज्ञानिक अधिकारी प्रिती गायकवाड के अनुसार खेत पर बने मकान के कमरे में सभी चीज सामान्य थी। कमरे में कहीं ऐसा साक्ष्य सामने नहीं आया कि, वहां चार-पांच लोग रात में आए हों। बच्चे एवं महिला की रस्सी से गला घोटकर हत्या का मामला सामने आया है।

प्रारंभिक जांच में महिला का पति शंका के दायरे में है, उसे कोई चोंट नहीं है। उसके हाथ भी संदिग्ध (फांसी के फंदे जैसे) बंधे हुए मिले हैं। एसएसपी सत्येन्द्र कुमार शुक्ल ने बताया कि, पुलिस सभी पहलुओं पर जांच कर रही है। जल्द ही मामले का खुलासा किया जाएगा।

रेरा कानून को ताक में रख नगर में धड़ल्ले से काटी जा रही अवैध कालोनिया

बिना अनुमति रोड और बिजली के खम्बे गाड़ कर कृषि भूमि में काट दिए गए प्लॉट, शासन को लग रहा है करोड़ों का चूना

माही की गूंज पेटलावद, राकेश गेहलोत

नगर में एक के बाद एक अवैध कॉलोनियां काटी जा रही है। ज्यादातर कोलोनिनाइज़र ओने-पोंने दाम पर कृषि भूमि खरीद कर उसे बिना रेरा की परमिशन लिए शासन को लाखों का चूना लगा कर, ग्राहकों को झांसे में लेने के लिए पक्की सड़क और बिजली खम्बे गाड़ कर, बिना भूमि डॉइवेशन करवाये लाखो रुपये में प्लाट काट कर विक्रय कर दिए। तो कुछ कालोनियों में दिखावे के कच्चे मार्ग मोरम से बना दिये गए। सबसे बड़ी बात ये फर्जी कोलोनिनाइज़र सब अधिकारियो और नगर परिषद की नाक के नीचे अंजाम दे कर करोड़ो के राजस्व की चोरी कर रहे है। कई बार मामले उजागर हो कर राजस्व न्यायालय तक भी मीडिया के माध्यम से पहुचे, लेकिन लेंन-देन और आपसी तालमेल से सारे मामले दबा दिए गए। प्रदेश ही नही बल्कि पूरे देश मे पेटलावद इकलौता ऐसा शहर होगा जहां आज तक सरकार द्वारा भू-माफियाओं के खिलाफ बनाए गए किसी भी नियम कानूनों के तहत कार्रवाई नही हुई। जबकि मुख्यालय समेत आसपास के ग्रामों में बेधड़क कॉलोनाइजर और रेरा के नियमो की धज्जियां उड़ाते हुए

प्लाटिंग की जा रही है।

लाखों-करोड़ों के एग्रीमेंट पर चल रहे काम, रजिस्ट्री के नाम पर कृषि भूमि की मामुली गाइडलाईन से हो रहा काम

ऐसा सिर्फ नगर में नही बल्कि पूरे अंचल में जमकर पनप रहे भू-माफिया ने जमीन का ऐसा धंधा जमाया है कि, एकड़ और हेक्टेयर के खेत वर्ग फीट में बिक रहे हैं। बिना डायवर्सन के जमीनों के न सिर्फ सौदे हो रहे है, बल्कि बिक्री पत्र भी तैयार हो रहे हैं। एकड़ और हेक्टेयर में खरीदी जाने वाली खेत की जमीन को प्लाट काटने के बाद अवैध रूप से वर्ग फीट में बेचा जा रहा है। जहां जमीन की रजिस्ट्री होने में विलंब होने की संभवना होती है, वहां एग्रीमेंट पर भी जमीन के सौदे हो रहे हैं। खेत को प्लाट में बेचने वाले ज्यादातर धंधा एग्रीमेंट पर कर रहे हैं और खरीददार भी इसके लिए आतुर नजर आते हैं। यही कारण है कई लोग तो सालों बाद रजिस्ट्री नहीं होने से परेशान भी हो चुके हैं। लेकिन ऐसे लोगों से नए खरीददार किसी भी तरह का कोई सबक नहीं लेते। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान के तमाम निर्देशो पर सिस्टम में बैठे अधिकारियो द्वारा पालन करवाने के लिए कोई पहल नही की जा रही है। ऐसा नही है कि, यह सब प्रशासन की नजर में नही है। शासन-प्रशासन के नुमाइंदों को इन सब कारनामों की सम्पूर्ण जानकारी है, लेकिन इन पर आज तक कोई ठोस कार्रवाई नही हुई।

(निरंतर पेज 2 पर)

शिक्षा व साक्षरता के गिरते स्तर का दोषी कौन?

वरिष्ठों में प्रभारी बनने की होड़, समीक्षा बैठक के बाद भी कमजोर परिणाम पर ठोस कार्रवाई नहीं

माही की गूंज, झाबुआ।

जनजातीय बाहुल्य झाबुआ जिले में शिक्षा का स्तर सुधारने के व साक्षरता ग्राफ बढ़ाने के लंबे समय से जारी प्रयास सिर्फ ''कागजी घुड़दौड़'' व औपचारिकता सिद्ध हो रही है। न तो जिले का साक्षरता ग्राफ ज्यादा बड़ा न हाई स्कूल, हाई सेकेंडरी के परीक्षा परिणाम में जिले ने कोई रिकार्ड बनाया। निरक्षरों के लिए साक्षरता हेतु 80 के दशक में प्रोड शिक्षा केंद्र, औपचारिक शिक्षा केंद्र आदि संचालित थे। 90-2000 के दशक में आखर यात्रा, पढना-बढना जैसे कार्यक्रम संचालित कर नौकरशाही के माध्यम से करोड़ों रुपये केंद्र व राज्य सरकार द्वारा फूंक दिए गए। तो विगत कुछ वर्षों पूर्व साक्षर भारत योजना में प्रेरकों के माध्यम से कक्षाएं संचालित की गई। परीक्षाएं भी ली गई, लेकिन यह सब सिर्फ औपचारिक ही रहा।

अब 'अ से अक्षर' अभियान चलाया जा रहा है। जिले से मानिटरिंग भी की जा रही है। लेकिन उक्त अभियान कितना सफल होता है या हो रहा है यह तो पंचायत चुनाव में मतदाता पंजीयन के समय हस्ताक्षर की जगह लगने वाले अंगूठे ही सारी हकीकत बयां कर देंगे। सिर्फ एक प्रभारी अधिकारी को जिले में बैठाकर बजाय उसकी स्कूल से उन्हे कूलर की ठंडी हवा मुहैया करा कर सिर्फ कुछ-कुछ हकीकत प्रेसनोट के माध्मय से बयां कर, प्रशासन बने 'अ से अक्षर' अभियान की सफलता की पीठ थपथपाले, किंतु आज भी रानापुर, मेघनगर, रामा के सुदूर अंचल के ग्रामीणों को न तो अपने खाते में कितने पैसे है का हिसाब आता है, न ही हस्ताक्षर करना।

परिणामों ने खोली पोल, कार्रवाई, वाहवाही या दिखावा 10 वीं, 12 वीं के बोर्ड परिणाम ने भी प्रदेश में 25 पायदान पीछे स्थान पाकर झाबुआ जिला सुर्खियों में है। सहायक आयुक्त जनजाती विभाग के प्रशांत आर्य के जिम्मे शैक्षणिक व्यवस्था की मानिटरिंग की जिम्मेदारी थी। किंतू आर्य ने अधिनस्तों में मेघनगर उत्कृष्ट के हेडमास्टर उर्फ प्रभारी प्राचार्य एनएस नायक, रानापुर के बीईओ राकेश सोनी, झाबुआ की बीईओ वर्षा चोरे, मेघनगर बीईओ जीएस देवहरे पर ज्यादा भरोसा किया। न साहब ने स्कूलों में कक्षावार कभी निरीक्षण किया और न ही शिक्षकों की टीचर डायरी देखी परिणाम चौकाने वाले रहे। बीईओ वर्षा चोरे जिस विद्यालय की प्राचार्य है वहां का परीक्षा परिणाम मात्र 8.47 प्रतिशत रहा। विद्यालय में कुल दर्ज 59 मे से 5 विद्यार्थी ही सफल रहे। अब झाबुआ ब्लॉक के कुछ निराशा जनक स्कूलों के परिणाम देखेंगे तो हकीकत बयां होते ही पालक सिर धुन लेंगे। वे जिन हुकमरानों पर विश्वास कर बच्चों को विद्यालय में प्रवेश कराते है, वहां के लापरवाह पिंसीपलों ने सिर्फ संकूल के कार्य व अनियमितता पर ही ज्यादा फोकस किया बजाय खुद पढ़ाने के। हाई स्कूल हुड़ा अल्पसंख्यक बाहुल्य विद्यालय है यहां 61 में से मात्र 5 बच्चे ही पास हुए। परिणाम 8.20 प्रतिशत रहा। हाई स्कूल करड़ावद बड़ी का परिणाम 16.88 प्रतिशत रहा। तो हाई स्कूल देवझिरी का परिणाम 18 प्रतिशत रहा। हाई स्कूल तलावली का परिणाम 16 प्रतिशत रहा। हाई स्कूल अंतरवेलिया का परिणाम मात्र 5.71 प्रतिशत रहा। रातीतलाई झाबुआ व कन्या उमावि झाबुआ जो कलेक्टर के नाक नीचे की स्कूलें है, वहां के प्राचार्यों ने भी शिक्षा व्यवस्था की नाक कटा दी। रातीतलाई का परिणाम 19.78 प्रतिशत व कन्या उमावि का परिणाम 22.16 प्रतिशत रहा।

अब नियमानुसार परिणाम आते ही वर्षा चोरे को बीईओ प्रभार से हटा दिया जाना चाहिए था, किंतू सिर्फ समीक्षा, शोकाज नोटिस, वेतन रोकने जैसे धमाकाई स्वर से ही जिलाधीश माहोदय ने इतिश्री कर ली। झाबुआ ब्लॉक में हायर सेकेंडरी के परिणाम भी कन्या उमावि व रातीतलाई व अंतरवेलिया के 40 प्रतिशत से कम रहे। साहब के आगे-पीछे घूमने वाले प्रभारी प्राचार्य भी प्रभावी परिणाम नहीं दे सके। मेघनगर विकासखंड के परिणाम ग्रामीण शालाओं में बेहतर रहे, तो बीईओ जो कि मुख्यालय पर नहीं रहते है। अपनी कन्या उमावि का 10 वीं का परिणाम मात्र 30.8 प्रतिशत ही दे पाए। यहां अध्यनरत 123 छात्राओं में से मात्र 37 छात्राएं ही सफल रही। 12 वीं में भी उक्त विद्यालय का परिणाम हर वर्ष की तुलना में निराशाजनक रहा, मात्र 39.55 प्रतिशत ही रहा। सर्वाधिक चौकाने वाला परिणाम सीएम राइस स्कूल की कवायद में जिस विद्यालय की तैयारी चल रही है वहां का रहा। उक्त उत्कृष्ट विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य जो कि, रसूखदार परिवार से व राजनीतिक दलों की निकटता से जुड़े है, पूर्व में प्रभारी सहायक संचालक व प्रभारी सीईओ जनपद भी रह चुके है। अक्सर यहां के प्राचार्य नायक को बड़े अधिकारियों व विभागीय वरिष्ठों एवं जनप्रतिनिधियों के आगे पीछे रेस्ट हाऊस से लगाकर सीएम हाऊस के आसपास भी मंडराते देखा गया है। सहायक आयुक्त आर्य के काफी नजदिकी रहने वाले नायक भी अपने विद्यालय का परिणाम श्रेष्ठ नहीं दे सके। उक्त विद्यालय का परिणाम हाई स्कूल का 14.74 प्रतिशत रहा। यहां 65 मे से 14 बच्चे ही पास हो सके व 76 बच्चे अनुर्त्तीण रहे। 12 वीं में 86 में से मात्र 23 बच्चे ही पास हुए। परीणाम 26.74 प्रतिशत रहा। करीब 52 बच्चे हाई स्कूल में अनुर्त्तीण रहे। परिणाम को लेकर क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों में काफी रोष है व स्टाफ को बदलने की मांग भी पालकों द्वारा प्रभारी मंत्री को की गई है।

रानापुर का परिणाम जिले में काफी निराशा जनक रहा

उत्कृष्ट उमावि रानापुर का परिणाम 5.36 प्रतिशत तो 12 वीं का परिणाम 21.62 प्रतिशत रहा। शिक्षक संघ के वरिष्ठ नेता अपने विद्यालय क्षेत्र का परिणाम भी बेहतर नहीं बना सके। उक्त विद्यालय भी सीएम राइस स्कूल की कवायद में है। कन्या शिक्षा परिसर रानापुर का परिणाम मात्र 20 प्रतिशत रहा। तो बेहतर संसाधन के बावजूद मॉडल उमावि पाडलवा 16 प्रतिशत ही रहा। हाई स्कूल टांडी का परिणाम 6.38 प्रतिशत रहा। बीईओ राकेश सोनी विद्यालयों के प्रबंधन व निरीक्षण में नाकाम सिद्ध रहे, यही परिणाम से नजर आ रहा है।

पढ़ाने के बजाय मलाई खाने में ज्यादा व्यस्त रहे व्याख्याता

जिले में अधिकांश स्कूलों में प्राचार्य के पद रिक्त है। डीसी व एसी के सहयोग से अधिकांश वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षक व उमावि विद्यालयों के व्याख्याता बजाय अध्यापन के जुगाड़ से व नेताओं के तिकड़म से स्कूलों के प्रभारी प्राचार्य बनने में सफल रहे। जिसका परिणाम निराशा जनक परीक्षा परीणाम है। ढेकल के गणित व्याख्याता राकेश सोनी समय पूर्व बीईओ का प्रभार देख रहे। मेघनगर उत्कृष्ट के व्याख्याता प्रकाश डामोर हाई स्कूल तलावली का प्रभार देख रहे, तो उच्च माध्यमिक शिक्षक केमिस्ट्री की शिक्षिका शीला सिसौदिया कालापीपल हाई स्कूल का प्रभार देख रही। व्याख्या पीएन अहीरवार बजाय काकनवानी के थांदला बीईओ बनकर मस्ती छान रहे है। कृषि जैसे महत्वपूर्ण विषय के व्याख्याता केएल परमार व अरविंद नायक भी प्रभारी प्राचार्य बने है। इस तरह जिले में प्रभारी बनने की होड़ ने कहीं न कहीं बच्चों के परिणामों को भी प्रभावित किया है।

गंदगी और बदबू से परेशान रहवासी, ग्राम पंचायत नहीं ले रही सुध

माही की गूंज, करवड़।

गंदगी का आलम यह है कि, जिससे रहवासियों का बदबू और गंदगी से जीना मुश्किल हो गया है। स्वच्छता अभियान को लेकर ग्राम पंचायत उदासीन है। नगर के मुख्य चोराहे पर बने शौचालय की हालत इतनी खराब है की लोग दो मिनिट खड़े तक नही रह सकते। गंदगी को लेकर बार-बार सचिव को शौचालय के बारे में अवगत कराया। जिसके बाद भी ग्राम पंचायत के द्वारा शौचालय में सफाई नहीं हुई, यह शौचालय करवड बस स्टैंड पर स्थित है। बाहर से आने वाले यात्रियों को शौचालय के लिए बाहर जाना पड़ता है, क्योंकि शौचालय में इतनी गंदगी फैली हुई है कि, कोई शौच के लिए यहां आता है तो वह भी 10 बार सोच कर शौचालय करता है और बाहर से आए महिलाओं को बहुत ही दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि महिलाओं को खुले में सोच करना पड़ता है, यहां बस स्टैंड होने की वजह से यात्रियों एवं महिलाओं को भारी परेशानी एवं बदबू का शिकार होना पड़ता है। ग्राम पंचायत के सरपंच एवं सचिव को कई बार इस बारे में अवगत करा चुके हैं, फिर भी ग्राम पंचायत का इस ओर ध्यान नहीं है।

सफाईकर्मी से जब चर्चा हुई तो सफाई कर्मी का कहना है कि, हमें समय पर ग्राम पंचायत वेतन नहीं देते हैं एवं आसपास के दुकानदारों को भारी बदबू का सामना करना पड़ता है। केवल चौराहे पर ही नही बल्कि नगर में इस तरह से गंदगी अपना पैर पसार रही है यह गंदगी

रतलाम-झाबुआ रोड स्थित कुमार मोहल्ला एवं गामड़ मोहल्ला में जाने के रास्ते पर इस प्रकार गटर का पानी आ रहा है, जिसमें ग्रामीणों को बहुत ही दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। गंदगी होने से मच्छर एवं खराब बदबू आती है।

गांव के भूतपूर्व सरपंच विकास गामड़ ने ग्राम पंचायत को कई बार कह दिया फिर भी यहां पाइप नहीं डालें जिससे गंदगी हो रही है।

25 मई से शुरू हुआ नौतपा

माही की गूंज, थांदला।

नौतपा अर्थात वे 9 दिन जब सूर्य धरती के ज्यादा करीब आ जाते हैं, जिससे गर्मी अधिक पड़ती है। नौतपा 25 मई शुरू हो रहा है और 2 जून तक रहेगा। नौतपा के दौरान प्रचंड गर्मी होती है, जिससे मानसून बनता है।

अगर इन 9 दिनों में बारिश होने लगे तो नौतपा का गलना कहा जाएगा। ऐसा होने पर अच्छी बारिश की संभावना नहीं होती। माना जाता है कि, नौतपा अगर गर्मी से खूब तपा तो उस साल अच्छे बारिश होती है। क्योंकि इसकी वजह से समुद्र के जल का तेजी से वाष्पीकरण होता है, जिससे बादल बनते हैं और बारिश करते हैं।

जिसकी लाठी उसकी भेस की तर्ज पर काम कर रहा राजस्व न्यायालय, स्टे लगी भूमि का कब्जा दिलवाने मौके पर पहुंचा

जमीन कब्जे को लेकर बैरागी परिवार के दो भाई पर किया जानलेवा हमला

माही की गूंज, पेटलावद।

विकास खंड में जमीन विवाद के पीछे हो रहे, विवादों में राजस्व विभाग की भूमिका संदेहास्पद नजर आ रही है। जहा कार्रवाई के दोहरे मापदंड से कार्य किया जा रहा है, जहा एक और बिना न्यायालय के स्टे आर्डर के कई प्रकरणों में अवैध कब्जे नही हटाये जा रहै और न्यायलय में मामला होने का हवाला देकर अटका रखे, तो दूसरी और न्यायालय के स्टे होने के बाद भी राजस्व विभाग का दल जमीन का कब्जा दिलवाने के लिए मौके पर दल-बल को लेकर स्थिति को और भी विवादित बनाया जा रहा है साफ है की राजस्व विभाग जिसकी लाठी उसकी भेस की तर्ज़ पर कार्य कर रहा है।

कब्जे को लेकर गरवाखेड़ी के बैरागी भाइयों पर किया हमला

मामला विकास खण्ड की ग्राम पंचायत तारखेड़ी के ग्राम गरवाखेडी का है। जहा सर्वे न. 125, 126, 128/2, 130/2 कुल रकबा 2-53 कृषि भूमियो पर राजेश बैरागी और बबलू बैरागी की पुश्तेनी बापदादा के समय कब्जा चला आ रहा है। जिला राजस्व रेकार्ड में नाम अंकीत किन्तु हमारे काका सोहनदास जो कि, ग्राम करडावद रहते थे, उन्होने उपरोक्त कृषि भूमियो पर राजस्व अधिकारीया से मिलकर कब्जा करवा लिया, किन्तु सोहनदास का किसी भी रूप में कब्जा आदि रहा नहीं है। सोहनदास ने उक्त कृषि भूमी वैभव कुमार निमजा को बैच दी, वैभव कुमार निमजा ने बयनामी पूर्वक कब्जा रहीत कृषि भूमियों को कब्जा भी रहा नहीं। राजस्व रिकार्ड में नाम दर्ज करवा कर बिना कब्जे राजेन्द्र पिता हमीरमल कांसवा गोपाल कॉलोनी झाबुआ को बेच दी।

मामला न्यायालय में, कब्जे को मान्य कर, बिना न्यायलिन प्रक्रिया के कब्ज़ा नही दिए जाने का जारी हो चुका है स्टे

शिकायतकर्ता राजेश और बबलू बैरागी ने एसपी सहित अन्य अधिकारियो को आवेदन देते हुए बताया कि, राजेन्द्र कांसवा का भी उक्त कृषि भूमियो पर आज तक कब्जा आदि नहीं रहा, हमसे विवाद झगड़ा कर रहा है। जबकि माननीय व्यवहार न्यायालाय पेटलावद में वा.क. 089ए/2018 का उपरोक्त लोगो के विरुद्ध किया। जहा से माननीय न्यायालय पेटलावद ने दिनांक 21 जनवरी 2020 को हमारे पक्ष में अस्थाई निषेधाज्ञा भी प्राप्त हुई, उक्त निषेधाज्ञा कि भी अवमानना कर राजेन्द्र कांसवा व राजस्व अधिकारीयो से मिल कर कब्जा दिलवानी कार्रवाई करने का प्रयास किया गया।

खेत पर जा रहे परिवार पर किया हमला

शिकायतकर्ता ने बताया कि, 20 मई 2022 को जब शाम को 7 बजे के आसपास दोनों भाई विवाद खेते के पास अन्य दूसरे खेतो पर गये तो देखा कि, राजेन्द्र कांसवा, तेजा पिता थावरीया सिंगाड निवासी गवाखेडी व अमृतलाल पिता कानाजी गुर्जर निवासी कुम्बाखेडी व सात-आठ को लेकर खड़े थे। हम जैसे ही हमारे खेत पर गये तो राजेन्द्र कांसवा व अन्य सात-आठ लोगो ने योजनाबद्ध तरीके हम दोनो भाईयो पर प्राण घातक हमला कर बुरी तरह से घायल कर मौके पर छोड़ चले गए।

राम कथा के पंचम दिवस प्रभु श्री राम को हुआ वनवास, अयोध्या में छाया मातम

माही की गूंज, सारंगी। संजय उपाध्याय

खेड़ापति हनुमान मंदिर प्रांगण में चल रही श्रीराम कथा मैं पांचवे दिन पंडित श्री मयंक शर्मा ने रामायण के अयोध्या कांड का वर्णन किया। पंडित जी ने बताया कि, राजा दशरथ ने अपने दिए हुए वचन का पालन कर केकई को दो वर दिए, जिसके कारण राम को 14 वर्षों का वनवास प्राप्त हुआ और भरत का राज्य अभिषेक राम पिता के वचन का पालन करते हुए 14 वर्षों के लिए वनवास को चल दिए। माता सीता ने पति की सेवा के लिए राजभवन के सुख को त्याग दिए, राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने भाई की सेवा के लिए राज भवन का त्याग कर वन को चल दिए। माता कौशल्या ने अपने बेटे का, उर्मिला ने अपने पति का, भरत ने अपने राज सिंहासन का त्याग कर 14 वर्षों तक सन्यासी का जीवन जिया। भगवान राम के वनवास चले जाने पर पूरी अयोध्या में मातम छा गया। पशु-पक्षी जानवरों ने भी अन्न-जल त्याग दिया, राम के वियोग में राजा दशरथ ने प्राण त्याग दिए। हर माता-पिता को अपने बच्चों को संस्कार वान बनाना चाहिए। अपने बच्चों को प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करने की आदत डालना चाहिए, ताकि वह धर्म के साथ जुड़े रहे।

राम जी के वनवास प्रसंग पर पंडाल में सभी की आंखें नम हो गई

मनुष्य को भी जीवन में भजन-कीर्तन-सत्संग में भाग लेना चाहिए। मनुष्य को अपने वचन पालन करने के लिए जो त्याग करना पड़े उससे करना चाहिए। पंडित जी ने कथा पंडाल में उपस्थित नारीशक्ति को सबसे महान बताया, क्योंकि नारी ही ममता, करुणा एवं त्याग की देवी है। कथा का लाभ नगर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के भी भक्त न लिया ।

पृष्ठ 1 का शेष...

रेरा एक्ट का उलंघन :

कोर्ट के आदेश और शासन के नियमों के तहत कृषि भूमि पर प्लांटिग प्रतिबंधित है। वहीं पेटलावद में शासन-प्रशासन की अनुमति के बिना ही कृषि योग्य भूमि की प्लाटिंग कर दी जा रही है। किसानों से जमीन खरीदकर प्लाट काट रहे हैं। एक्ट के अंतर्गत बिना कॉलोनाइजर लाइसेंस व नियमों के बिना प्लाटिंग नहीं की जानी है। खेती जमीन का डायवर्सन भी जरुरी है। क्षेत्र में जितनी भी जमीन की खरीदी-बिक्री हो रही है वह किसी भी नियम कानूनों को धता बताते हुए हो रही है और प्रशासन आखिर क्यों भू-माफिया के खिलाफ कदम नही उठाता यह एक बड़ा सवाल है। क्या शासन के तमाम कॉलोनाइजर, रेरा एक्ट पेटलावद में सिर्फ पढ़ने सुनने के लिए हैं...?

नियमों के तहत ये कार्रवाई की जाती है

भू-राजस्व संहिता की धारा 172 के तहत कलेक्टर या राजस्व के एसडीओ अवैध निर्माण करने वालों पर बाजार की कीमत का 20 प्रतिशत तक जुर्माना और दंडात्मक कार्रवाई कर सकते हैं।

नगरीय क्षेत्र में कॉलोनाइजर्स नियम का पालन कराना, नगर परिषद की जिम्मेदारी होती है। पंचायत क्षेत्र में कॉलोनाइजर्स नियम- 21 में कलेक्टर को अवैध कॉलोनी को खत्म करने और इसे विकसित करने वाले पर दंडात्मक कार्रवाई करने का अधिकार है।

अब तो न सिर्फ अवैध रूप से जमीन बेचने वालों के खिलाफ बल्कि जमीन का अवैध धंधा करने वालों से जमीन खरीदने पर खरीदने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई का प्रावधान हो गया है।

मिलते है केवल और केवल आश्वासनः

अवैध प्लाटिंग का खेल शहर के साथ गांवों में भी जारी है। नगरीय क्षेत्र में कार्रवाई के लिए कलेक्टर और ग्रामीण क्षेत्र के लिए एसडीएम अधिकृत हैं, लेकिन कार्रवाई कोई नहीं कर रहा। नगरीय क्षेत्र में अवैध प्लाटिंग के खिलाफ कार्रवाई करने नगर परिषद के पास भी अधिकार है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में अवैध प्लाटिंग पर राजस्व विभाग द्वारा कार्रवाई की जा सकती है। दोनों विभाग के अधिकारी हर बार आश्वासन तो देते हैं कि, कार्रवाई सिर्फ नोटिस तक सीमित है। जिसके चलते पेटलावद में चल रहे अवैध प्लाटिंग पर अब तक शिकंजा नही कसा जा सका है।

रेरा में रजिस्टर्ड प्रापर्टी डीलर को क्या करना पड़ता हैः

शासन द्वारा रजिस्टर्ड एजेंट श्वेता जैन ने बताया, रेरा में रजिस्टर्ड प्रापर्टी डीलर को जहां भी कालोनी में वह प्लाट बेचता है, उसका पहले विधिवत डायवर्सन कराना पड़ता है और नगरपालिका या नगरनिगम में पंजीयन कराना पड़ता है। कालोनी में कोलोनाइजर को बिजली, पानी व सड़क जैसी मूलभूत सुविधाएं देनी पड़ती है। साथ ही सुरक्षा के इंतजाम भी करने पड़ते हैं। प्रापर्टी डीलर व कोलोनाइजरों ने बिना किसी रजिस्ट्रेशन के काम कर रहे हैं न तो उन्होंने अपना या जमीन का डायवर्सन कराया है और न ही ननि में पंजीयन कराकर विधिवत अनुमति ली है। प्रापर्टी डीलर सीधे किसानों से जमीन खरीदने का एग्रीमेंट करते हैं। इसके बाद प्लाट बेचते समय वे किसानों से ही प्लाट खरीदने वाले को रजिस्ट्री करा देते हैं। यानि बीच में वे अपना कमीशन खाते हैं।

क्या नुकसान होता है प्लाट खरीदने वालों को

चूंकि प्लाट बेचने वाला कोलोनाइजर रेरा या अन्य किसी संस्था में रजिस्टर्ड नहीं हैं। इसलिए इनके खिलाफ प्लाट खरीदने वाले लोग शासन, प्रशासन व न्यायालय में शिकायत नहीं कर पाते। जहां पर अवैध कालोनी विकसित होती है, उसका टैक्स आदि नगरीय निकायों में नहीं पहुंचता। इसलिए नगरीय निकाय भी ऐसी कालोनियों के विकास में रुचि नहीं दिखाते। ऐसे में सड़क, बिजली व सड़क जैसी मूलभूत सुविधाओं को लेकर लोग हमेशा परेशान रहते हैं।

किसानों को अभी नुकसान और बाद में भी नुकसान

कोलोनाइजर किसानों से एग्रीमेंट कराते हैं, स्वयं के नाम से रजिस्ट्री नहीं कराते। जबकि वे किसानों से जमीन को खरीदते सस्ते दामों में हैं और प्लाट महंगे दामों में बेचते हैं। चूंकि कृषि भूमि के तहत खेत के खेत एक साथ बिकते हैं, लेकिन किसान अलग-अलग लोगों को कोलोनाइजर के कहने पर रजिस्ट्री कर रहे हैं। बाद में यदि रेरा सहित अन्य मामले को उठाया जाता है, तो किसानों पर ही पूरी गाज गिरनी है। उसे ही जीएसटी देना होगा और रेरा के तहत कार्रवाई का सामना करना होगा।

दूसरी और जिम्मेदार ये कह कर पल्ला झाड़ लेते है, जहां-जहां अवैध कोलोनाइजिंग की शिकायतें मिलती हैं वहां पर कालोनाइजर के खिलाफ कार्रवाई करते हैं। दूसरी और प्रशासन की नाक के नीचे चल रहे खेल को अनदेखा कर लोगों को प्लाट खरीदने से रजिस्टर्ड कोलोनाइजर है या नहीं ये देखने की राय दे रहे है।

शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव एवं श्रीमद् भागवत कथा का हो रहा आयोजन

नगर धर्ममय हुआ, बड़ी संख्या में पहुंच रहे संत समाज और श्रद्धालू, प्रतिदिन रात्रि में धार्मिक आयोजन हो रहे हैं

माही की गूंज, झकनावदा। आनंद सोलंकी

पहली बार शिव परिवार हनुमान जी महाराज और नवग्रह देवता भेरुजी महाराज का श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा का आयोजन 21 मई से 27 मई तक भव्य रूप से किया जा रहा है आयोजन को लेकर गत 2 माह से सभी धर्म प्रेमी ग्राम की जनता उत्साह के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में लगे हुए है। समस्त ग्राम की जनता इस कार्यक्रम में तन-मन-धन से सहयोग देकर भव्य रुप से इस ज्ञान की गंगा को आमजन तक पहुंचाने मे लगे हुए हैं। इस कार्यक्रम को लेकर ग्राम की धर्मप्रेमी जनता ने पूरे नगर को दुल्हन की तरह सजाया ग्राम के मुख्य मार्ग व यज्ञ मंडप को तोरण लगाकर सजाया। कार्यक्रम स्थल मधु कन्या नदी के तट पर प्राचीन मंदिर शंकर मंदिर पर आयोजन हो रहा है। इस आयोजन में पंचकुंड आत्मक हवन के लिए यज्ञशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री ईश्वर आनंद जी उत्तम स्वामी जी महाराज, श्री 1008 रामेश्वर गिरी जी महाराज सिंघेश्वर धाम, श्री 1008 योगेश्वर जी महाराज बालीपुर धाम, श्री 1008 दयाराम दास जी महाराज पिंपलखुटा, श्री 108 श्री राम बाबा जी त्यागी कनेरा कुक्षी, यज्ञआचार्य पंडित जगदीश चंद्र जी भट्ट उज्जैन के पावन सानिध्य में कार्यक्रम का आयोजन होने जा रहा है।

जिसमें प्रतिदिन रात्रि कालीन भक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत 22 मई को भव्य खाटू श्याम भजन संध्या का आयोजन आशा राठौर उज्जैन में अमित पारीक मक्सी द्वारा किया गया। खाटू श्याम भजन संध्या में विशेष रुप से श्री कनकेश्वरी देवी का भी ग्राम की धर्म-प्रेमी जनता को आशीर्वचन प्राप्त हुआ। 23-24 मई को नानी बाई का मायरा ग्राम के रसिक कथा वाचक मंगलेश्वर दास जी बैरागी के द्वारा वाचन किया जा गया। 25 मई को पवन पुत्र सुंदरकांड मंडल अमझेरा ललित शर्मा द्वारा सुंदरकांड का पाठ किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिन विशाल चल समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें घुड़सवारी, बग्गी, ढोल, आदिवासी नृत्य, कई प्रकार के आकर्षण झांकियो, वाद्य यंत्रों से चल समारोह का आयोजन किया गया। चल समारोह में महिलाओ द्वारा कलश यात्रा निकाली गई, प्रथम दिन में संपूर्ण प्रसादी का आयोजन किया गया। जिसमें छोटा बिठुडा संगठन की और से संपूर्ण नगर को भोज प्रसादी किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन 27 मई को संपूर्ण नगर भोज का आयोजन नगर चौरासी के रूप में लाभार्थी कु.हर्ष राज सिंह ठाकुर, जगपाल सिंह राठौर झकनावदा की और से नगर चौरासी भोज का आयोजन रखा गया है, तथा राधा-कृष्ण मंदिर में कलश स्थापना, ध्वजारोहण, शिखर निर्माण का आयोजन भी होगा। इस आयोजन में महारुद्र सह सतचंडी महायज्ञ के मुख्य जजमान शिक्षक उदय सिंह गामड़ जो की एक आदिवासी परिवार से होकर क्षेत्र में धर्म का अलख जगा रहे है।

बड़ी संख्या में पहुंच रहे संत समाज और श्रद्धालू

आयोजन में बड़ी संख्या में संत समाज का आगमन हो रहा है, जिनका पूरे नगर में स्वागत किया जा रहा है। क्षेत्र में सिंघेश्वर धाम की बढ़ती लोकप्रियता और रमणीय स्थल के रूप में उभरने के बाद इस आयोजन को देखने, सुनने बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को ताता लग रहा है। जो सुप्रसिद्ध संत उत्तम स्वामीजी के मुखरबिंद से कथा का श्रवण करने पहुच रहे है। रात्रि में हो रहे धार्मिक आयोजनो में भारी संख्या में लोग पहुच कर धर्म लाभ ले रहे है।

लापरवाही: मासूम की करंट की चपेट में आने से मौत

माही की गूंज, पेटलावद।

- सकरी गली में लगे इस पोल पर करंट की चपेट में आने से हुई मौत।

मेंटेनेंस के नाम पर लाखों करोड़ों खर्च करने के बाद भी लोगो की जान से खिलवाड़ करने वाली विधुत वितरण कम्पनी की लापरवाही की भेंट एक मासूम चढ़ गया। मंगलवार को सुबह 11 बजे करीब पेटलावद नगर के मध्य भेरूचौक पर एक बालक को बिजली पोल से करंट का झटका लग गया, जिसके कारण वह गंभीर रूप से घायल हो गया। इसके बाद परिजन उसे हॉस्पिटल लेकर पहुंचे, जहां डाक्टरों की लाख कोशिशों के बावजूद बालक के दम तोड़ दिया। बताया जा रहा है कि, मंगलवार सुबह 15 मिनट तक हुई बारिश के कारण बिजली के लोहे के पोल में करंट उतर गया। जब सलीम कुरेशी का बालक कचरा वाहन में अपने घर का कचरा फेकने गया था, उसी दौरान उसका हाथ पोल के संपर्क में आया तो उसे करंट का जोरदार झटका लग गया। हॉस्पिटल में बालक ने अंतिम सांस ली। इस घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। वहीं पूरे मोहल्ले में पोल को लेकर भय व्याप्त है।

स्थानीय निवासी इसे विभाग की लापरवाही बता रहे है, उनका कहना है कि, अभी मामूली बारिश हुई और इस तरह से बिजली के पोलो में करंट उतर रहा है। अगर आगे अधिक बारिश हुई तो क्या होगा। विभाग मानसून के पहले मेंटेनेंस करती है, लेकिन ऐसे मेंटेनेंस की जरा सी बारिश में पोल खुल गई और एक मासूम को अपनी जान से हाथ धोना पड़े। लोगो का कहना है कि, विभाग की ऐसी लापरवाही से हुई घटना के बाद अधिकारियों पर कार्रवाई होनी चाहिए।

सकडी गली में लगा हुआ है पोल, नगर में लगे पोल से डरने लगे है लोग

नगर के भेरू चौक से राजापुरा की और जाने वाली सकरी गली में पोल लगा हुआ है। जहां अक्सर करंट उतरने की बात कही जा रही है, लेकिन कभी करंट की तीव्रता इतनी नही रही कि, किसी की जान चली जाए। इस गली से लोगो की लगातार आवाजाही लगी रहती है। ऐसे में अगर पोल पर लगी केबल को दुरुस्त नही किया गया या पोल नही हटाया गया तो भविष्य में और भी जान जा सकती है। पूरे नगर में ऐसे पोल जगह-जगह लगे हुए है, इस घटना के बाद लोगो मे बिजली विभाग के पोल को लेकर दहशत है और विभाग से बारिश के पूर्व सही मेंटेनेंस की मांग की जा रही है ताकि इस प्रकार की घटना में फिर किसी परिवार का चिराग न बुझ जाए। भाजपा नेता नगर पालिका अध्यक्ष मनोहर भटेवरा और पूर्व पार्षद संजय कहार ने घटना पर दुख व्यक्त करते हुए परिवार को हर प्रकार से न्याय दिलाने के लिए सहयोग की बात की है।

तीन दिवसीय समर केम्प हुआ आयोजित

माही की गूंज, कुन्दनपुर।

समावेश यूनिसेफ के संयुक्त प्रयास से तीन दिवसीय समर केंप स्रोत पर्सन प्रशिक्षण आयोजित किया। जिसमे संकुल कुन्दनपुर मे चयनित 20 वालियनटियर ने भागीदारी की। ये स्कूल स्तर पर बच्चों को समर केंप के जरिए सिखायेगें। जिसका मुख्य उददेश्य कोविड-19 के दौरान बच्चों मे आए लर्निंग गेप में सुधार करना, फन और टिकरिंग गतिविधियों को बढावा देना, पालकों कों बढावा देना ताकी स्कूल के प्रति बच्चों की रूची बढें।

ब्लाक कोआर्डीनेटर अशोक मेहन्दिया ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि, ब्लाक मे पिछले चार वर्ष से शिक्षा कार्यक्रम संचालित हो रहा है। बीआरसी, बीएसी, जनशिक्षक, शिक्षकों का योगदान सराहनीय रहा। इस बार 12 स्कूलो में समर केंप संचालित करने की योजना है। खास कर एकल शाला, शिक्षक शालाओं को मुख्य रूप से फोकस किया गया है। स्कूल स्तर पर समर केंप संचालित करने के लिए संकुल स्तर पर सक्रिय स्रोत पर्सन के रूप मे गांव के युवा/युवतीयों व अतिथि शिक्षकों को तैयार किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण मे फन गणित भाषा, चित्रकला, ओरीगेमी, आर्ट एंड क्राप्ट, खिलौने कविताओं को शामिल किया। जिसमे कांटे वाली नाव घर, सोफा, सुपडी, लुडक मास्टर, टेलीफोन, टरटू, लेंप, झुमर, चिटचिटी जैसी गतिविधियों को सीखाया जा रहा है।

समावेश टीम अशोक मेहन्दिया, राकेश चौहान, संकुल के जनशिक्षक रामसिंह मैंडा, जितेन्द्र जेन, कुन्दनपुर प्राचार्य कविता तिवारी, नरेन्द्र कुंडल ने अहम भमिका निभाई।

स्वाध्याय प्रेमी श्री चंद्रेशमुनिजी, गौरवश्री सुयशमुनिजी ठाणा सहित चतुर्विद संघ के चातुर्मास का मिलेगा लाभ

माही की गूंज, थांदला।

आचार्यश्री उमेशमुनिजी के शिष्य धर्मदास गणनायक प्रवर्तकश्री जिनेंद्रमुनिजी के आज्ञानुवर्ती स्वाध्याय प्रेमी श्री चंद्रेशमुनिजी एवं थांदला गौरवश्री सुयशमुनिजी ठाणा 2 का आगामी चातुर्मास थांदला श्रीसंघ को मिला हैं। यह घोषणा प्रवर्तकश्री जिनेंद्रमुनिजी ने मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के राजपुर नगर में मंगलवार को की। इस मौके पर श्रमण भगवान महावीर स्वामी, आचार्यश्री उमेशमुनिजी, प्रवर्तकश्री जिनेंद्रमुनिजी, स्वाध्याय प्रेमीश्री चंद्रेशमुनिजी सहित थांदला गौरवश्री सुयशमुनिजी के गगनभेदी जयकारों से वातावरण गुंजायमान हो गया। वहीं थांदला नगरवासीयो को यह जानकारी मिलते ही श्रीसंघ में उल्लास का वातावरण छा गया। गौरतलब हैं कि, थांदला गौरवश्री सुयशमुनिजी का दीक्षा के बाद थांदला नगर के लिए यह पहली मर्तबा चातुर्मास होगा।

थांदला संघ के पदाधिकारी भी उपस्थित

राजपुर में इस प्रसंग पर श्रीवर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ थांदला के अध्यक्ष जितेंद्र घोड़ावत सहित संघ के पदाधिकारीगण व सदस्य भी उपस्थित थे।

चतुर्विद संघ का लाभ मिलेगा

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ थांदला के सचिव प्रदीप गादिया व ललित जैन नवयुवक मंडल के अध्यक्ष रवि लोढ़ा ने बताया कि, पूर्व से यहां सकारण साध्वीश्री निखिलशीला, दिव्यशीला, प्रियशीला एवं दीप्ति ठाणा 4 पौषध भवन पर सुखसाता पूर्वक विराजित हैं और श्रीसंघ आपकी वैयावच्च आदि का पूरा-पूरा लाभ ले रहा हैं। इस तरह थांदला संघ को इस मर्तबा वर्षावास में चतुर्विद संघ का लाभ मिलेगा।

13 जुलाई से होगा वर्षावास प्रारंभ

इस बार वर्षावास 13 जुलाई से प्रारंभ होगा। वर्षावास के दौरान संत मंडल एवं साध्वी वृंद के सानिध्य एवं प्रेरणा से श्रावक-श्राविकाएं व बच्चें विभिन्न आराधनाओं का लाभ लेने के लिए उत्सुकता पूर्वक रम जाएंगे।

श्रीजी पादस्पर्श महोत्सव की निमंत्रण पत्रिका का हुआ विमोचन

माही की गूंज, पेटलावद।

श्री सरस्वतीनंदन स्वामी भजनाश्रम गुरुद्वारा पर आयोजित होने वाले श्रीजी पादस्पर्श महोत्सव अखंड संकीर्तन हेतु निमंत्रण पत्रिका का विमोचन गत दिवस किया गया। निमन्त्रण पत्रिका का विमोचन समिति अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष व अन्य सदस्यों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। पत्रिका का विमोचन के साथ-साथ निमंत्रण देने के लिए एक दल का गठन भी किया गया। जो गुजरात व अन्य स्थानों पर जाकर गुरु भक्तों को निमंत्रण देकर कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने हेतु आह्वान करेगे।

12 वर्ष से हो रहा आयोजन

लगातार 12 वर्षो से हो रहे इस आयोजन में कोविंड के कारण 2 वर्षो तक स्थानीय भक्तों ने ही कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाया। इस वर्ष कोविड अन्य बीमारियों का कोई प्रोकोप न होने से पूर्ण उत्साह के साथ आयोजन मनाया जाएगा। यह आयोजन गुरुदेव के प्रथम बार पेटलावद नगर में आगमन को लेकर उनकी याद में मनाया जा रहा है।

इसी कारण इस आयोजन को पाद (चरण) स्पर्श महोत्सव नाम दिया गया है।

आयोजन 6 जून से 9 जून तक चलेगा। जिसमें 72 घण्टे अखंड संकीर्तन एवं उसके पश्चात पादुका पूजन, महाआरती और भंडारे का आयोजन होगा। समिति द्वारा आयोजन की सभी तैयारियां की जा रही है।

हजरत ओढ़ी वाले बाबा की दरगाह पर 2 जून से शुरू होगा 19 वां उर्स, तैयारिया शुरू

माही की गूंज, पेटलावद।

हजरत ओढ़ी वाले दातार के 29 वा उर्स 2 जून से शुरू होगा। पंपावती नदी के पावन तट के किनारे स्थित दातार की दरगाह न केवल मुस्लिम समुदाय बल्कि अन्य धर्म के लोगो के लिए भी आस्था का केंद्र है। यहां होने वाले उर्स में सीमावर्ती गुजरात व राजस्थान राज्य से भी जायरीन आते है। उर्स के मद्देनजर सर्व समाज उर्स कमेटी ने दरगाह परिसर में रंगाई-पुताई का कार्य शुरू किया है। पूरे दरगाह परिसर में पेंटर वसीम खान द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन किया जा रहा है। उर्स कमेटी के सदर सलीम शेख और उपसदर अमजद लाला ने संयुक्त रूप से बताया कमेटी के सदस्यों द्वारा उर्स के लिए तैयारियां जोर-शोर से की जा रही है। सर्व उर्स कमेटी ने उर्स में अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता करने का आह्वान किया है। यहां होने वाले उर्स में कई राज्यों से भी श्रद्धालु अपनी मन्नते लेकर आते हैं। उर्स 4 जून तक चलेगा। तीन दिनों तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन होगा। रात में कव्वाली की महफिल सजेगी। इसमें मध्यप्रदेश और राजस्थान की कव्वाल पार्टियां हजरत की शान में कलाम पेश करेंगी।

उर्स में पहली बार एक बड़े संत का होगा आगमन

इस बार उर्स में एक बड़े संत फकीर का आगमन भी होगा। यह संत मकनपुर (यूपी) में स्थित हजरत बदीउद्दीन शाह, मदार जिंदा शाह, मदार रे.अ. के गुलाम है, जिनका नाम ताजदारे मलंगा सय्यद मासूम अली शाह मलंग मदारी है। इनकी उम्र 115 साल है और ये बुजुर्ग हस्ती पहली बार पेटलावद में प्रवेश कर रही है। यही नहीं आसपास के जिलों में अभी तक इनका आगमन नहीं हुआ था। पेटलावद जैसी छोटी जगह पर इतने बड़े संत का आगमन कहीं न कहीं पेटलावद की सरजमीं के लिए एक बहुत बड़ी खुशनसीबी की बात है। उनके साथ उनके बालक फ़ख़रे मलंगा, सय्यद, रफ़ीक, अली बाबा मलंग भी मौजूद रहेंगे।

लाल बाबा की गादी होगी रोशन

मालवा-निमाड़ से लेकर महाराष्ट्र-राजस्थान सहित अन्य जगहों पर लोगो को सभी धर्मो का पाठ पढ़ाने वाले हज़रत लाल बादशाह की गादी शरीफ भी पेटलावद में उनके तमाम चाहने वाले हिंदू-मुस्लिम भाइयों द्वारा इस बार रोशन की जा रही है। बता दे कि, विगत 4 साल पहले लाल सरकार ने दुनिया से पर्दा ले लिया था। इसके बाद उनका आस्ताना ए मुबारक रूणिजा गांव (बड़नगर के पास) में बनाया गया है। इस कार्यक्रम की भी तैयारी सभी अपने स्तर पर कर रहे है।

2 जून सुबह 8 बजे आस्ताने औलिया पर कुरआन ख्वानी होगी। शाम को असर की नमाज के बाद पुलिस वाले बाबा की दरगाह से चादर शरीफ का जुलूस निकलेगा। जुलूस में जावेद सरफराज चिश्ती कव्वाल द्वारा कोमी एकता और हजरत की शान में एक से बडकर एक कलामे पेश किए जाएंगे। जुलूस नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए, आस्ताने औलिया पर पहुंचेगा। जहां संदल और चादर पेश की जाएगी। रात 8 बजे ताजदारे मलंगा हजरत मासूम अली शाह मलंग मोला की शान में तकरीर फरमाएंगे।

3 जून रात 8 बजे बाद शुरू होने वाले महफिले सिमां कार्यक्रम में देश के प्रसिद्ध कव्वाल यूसुफ फारुख (जावरा) और सदाकत साबरी कपासन (राजस्थान) की कव्वाल पार्टियां प्रस्तुति देगी।

4 जून सुबह 9 बजे महफिले रंग व कुल की फातेहा होगी। इसमें यूसुफ फारुख कव्वाल पार्टी रंग पढ़ेगी। दोपहर बाद लंगर (विशाल शुद्ध सात्विक भंडारे) का आयोजन किया जाएगा।

संपादकीय

कोरोना संकट में आशा कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान

कोरोना संकट के दौरान अपना व परिवार का जीवन संकट में डालकर संक्रमितों की पहचान व उपचार में मदद करने वाली आशा कार्यकर्ताओं ने भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में नई आशा जगाई है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने यह भी संदेश दिया है कि, सीमित संसाधनों और मामूली वेतन में मानवता की कितनी बड़ी सेवा की जा सकती है। अब उनके इस योगदान को देश ने ही नहीं, पूरी दुनिया ने भी स्वीकारा है। देश की ग्रामीण आबादी में महिलाओं को जागरूक करने व बच्चों को प्राथमिक उपचार, पोषण जागरूकता व शिक्षा अनुकूल वातावरण मुहैया कराने वाली लाखों आशा कार्यकर्ताओं का सिर आज गर्व से ऊंचा उठा है। उन्हें कोरोना संकट के दौरान मानवता की सेवा करने पर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ग्लोबल हेल्थ लीडर्स अवार्ड देकर सम्मानित किया है। यह सम्मान उन्हें लोगों की जीवन रक्षा करने, सेवा मुहिम को कुशल नेतृत्व देने तथा ग्रामीण जीवन में गुणात्मक सुधार लाने में योगदान के लिए दिया गया है।? वाकई, समर्पित आशा वर्कर इस सम्मान की हकदार थीं।

हमारे देश में ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं का जो स्तर है वह किसी से छिपा नहीं है। ग्रामीण स्वास्थ्य तंत्र का पहला पायदान कहे जाने वाले आंगनवाड़ी केंद्र, सरकार की स्वास्थ्य जागरूकता हेतु महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं जिसका मकसद ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर वर्ग के लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना भी रहा है। दरअसल, आशा कार्यकर्ताओं ने बच्चों व माताओं के स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिये अथक प्रयास किए हैं। इसमें टीकाकरण से लेकर कुपोषण की चुनौती का मुकाबला भी शामिल रहा है। इतना ही नहीं, देश में विशाल पोलियो वैक्सीन कार्यक्रम बिना आशा कार्यकर्ताओं के सफल होना संदिग्ध था। कुल मिलाकर सामुदायिक स्वास्थ्य सेवाओं को समृद्ध करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके अलावा लोगों को जीवन शैली से उपजे रोगों से मुक्त कराने तथा स्वच्छता की मुहिम से रोग भगाने जैसे अभियानों में आशा वर्करों ने नई उम्मीद जगाई है।

हाल के दिनों में पूरे देश से आशा वर्करों के आंदोलन की खबरें विचलित करती रहीं। कोरोना संकट में अग्रिम मोर्चे पर खड़ी रही इन कार्यकर्ताओं का सड़क पर उतरना परेशान करता रहा है। ग्रामीण जीवन की सेहत के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने वाली आशा वर्करों के बीच यदि निराशा पैदा होती है तो हम संपूर्ण स्वास्थ्य के लक्ष्य हासिल नहीं कर पाएंगे। दरअसल, इन कार्यकर्ताओं को इनके योगदान के अनुरूप मानदेय नहीं मिलता। अब जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इनके योगदान को मान्यता दी है तो केंद्र सरकार का दायित्व बनता है कि, इन कार्यकर्ताओं की सेवाओं को स्थायी करने और सम्मानजनक वेतन देने की दिशा में पहल करे। इनकी सेवा शर्तों में सुधार के अलावा इन्हें वे साधन उपलब्ध कराए जाने चाहिएं जिनसे ये जटिल भौगोलिक परिस्थितियों में भी शीघ्रता से अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें।

यह विडंबना ही है कि, देश ग्रामीण इलाकों में साक्षरता के लक्ष्यों को हासिल नहीं कर पाया है। ऐसे में स्वस्थ व कुपोषण-रहित भारत के लक्ष्यों को पूरा करने में जन-जागरण के जरिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ग्रामीण महिलाओं को मातृ दुग्धाहार के प्रति जागरूक, बच्चों के लिये पोषाहार की व्यवस्था तथा स्वास्थ्य व परिवार नियोजन के प्रति सचेत कर सकती हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में चौदह लाख आंगनवाड़ी केंद्र हैं जिसमें तेरह लाख से अधिक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व ग्यारह लाख से अधिक सहायिकाएं कार्यरत हैं। देश में ग्रामीण अंचलों में आर्थिक विसंगति, अशिक्षा व जागरूकता के अभाव से ग्रसित समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने में ये समर्पित कार्यकर्ता निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं। सरकार और हम सब का दायित्व है कि, इनकी मूलभूत आवश्यकताओं को यथाशीघ्र पूरा किया जाए। जिससे ये उत्साहित होकर राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करने में जुट जाएं। वेतन व सेवा शर्तों में सुधार करके इनका मनोबल बढ़ाया जा सकता है। डब्ल्यूएचओ ने वैश्विक सम्मान देकर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों को मान्यता ही दी है। केंद्र सरकार का इस दिशा में उठाया गया कोई भी कदम राष्ट्रीय कल्याण के यज्ञ में आहुति का ही कार्य करेगा।

क्वाड शिखर सम्मेलन से आगे की चुनौतियां

पिछले महीने, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के एक बयान पर भारत की भौंहें तन गईं, जब उन्होंने यूक्रेन में रूसी सैन्य दखलअंदाजी पर भारत को अपनी नीतियों में 'कुछ अस्थिर' बताया। उनका उक्त कथन एक माह से भी कम समय पहले, 3 मार्च को हुए क्वाड वर्चुअल शिखर सम्मेलन के बाद आया, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा ऑस्ट्रेलियन प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरीसन, जापानी प्रधानमंत्री फ्यूमियो किशिदा और राष्ट्रपति बाइडेन ने भाग लिया था। सार्वजनिक रूप से बताया गया कि, वार्ता में यूक्रेन के हालिया घटनाक्रम का असर मानवीय पहलुओं पर होने समेत अन्य विचार-विमर्श किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने जोर देकर कहा कि, दोनों पक्षों को अंतर्राष्ट्रीय कानून और राष्ट्रों की सार्वभौमिकता का आदर करते हुए पुनः वार्ता और राजनयिक उपायों पर लौट जाना चाहिए। अगली क्वाड वार्ता 24 मई को टोक्यो में हुई। जहां राष्ट्रपति बाइडेन की टिप्पणी से भारत में कइयों को हैरानी हुई थी, तथ्य यह भी है कि, उन्होंने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और राष्ट्रपति जॉर्ज बुश जूनियर के बीच हुए भारत-अमेरिका परमाणु संधि करार का समर्थन किया था, जिससे भारत पर लगे वैश्विक आणविक प्रतिबंध खत्म हो पाए थे।

वाशिंगटन डीसी में क्वाड सम्मेलन को लेकर हुई वार्ता में भारत की ओर से रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस. जयशंकर तो अमेरिकी पक्ष में विदेश मंत्री ब्लिंकन और रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने भाग लिया था और बृहद मुद्दों पर बात हुई। इसमें कोविड वैक्सीन उत्पादन बढ़ाने से लेकर पर्यावरण और आर्थिक विकास इत्यादि विषय थे। सबसे अहम, दक्षिण चीन सागर समेत सब जगह, कानून-आधारित व्यवस्था को बनी चुनौतियां का हल अंतर्राष्ट्रीय कानून का पालन करके निकालने पर जोर एकदम स्पष्ट था। चीन ने खुलेआम अंतर्राष्ट्रीय सागरीय कानून की धज्जियां उड़ाते हुए तमाम पड़ोसी मुल्कों की समुद्री सीमाओं का अतिक्रमण कर रखा है। जहां आसियान संगठन के कुछेक सदस्य, जैसे कि इंडोनेशिया, चीन के समुद्री सीमा संबंधी दावों को चुनौती दे रहे हैं वहीं बाकियों ने चीन की आक्रामक प्रतिक्रिया के डर से ऐसा न करना चुना है। यही रवैया हाल ही में राष्ट्रपति बाइडेन द्वारा वाशिंगटन में आसियान संगठन के राष्ट्राध्यक्षों के लिए आयोजित शिखर सम्मेलन में स्पष्ट रूप से देखने को मिला।

समय-समय पर भारत को लेकर आए राष्ट्रपति बाइडेन के विचार सर्वविदित हैं। यह साफ है कि, बाइडेन चीन का सामना करने वाले ताइवान को अमेरिकी समर्थन देने सहित अन्य उपायों पर कृत-संकल्प हैं। तथापि उन्होंने श्रीलंका की मदद के लिए कोई बयान जारी नहीं किया है, जिसे इस वक्त आर्थिक सहायता की बेतरह जरूरत है। बाइडेन प्रशासन के रवैये से लगता है, ध्यान इस ओर है कि विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष श्रीलंका के गंभीर आर्थिक संकट का विश्लेषण कर उसकी जरूरतों को पूरा करें। हालांकि बाइडेन ने यूएई के सुल्तान शेख ज़ायद से अपने मतभेद कम करने की दिशा में उनके पिता के शोक समारोह में भाग लेने के लिए उप-राष्ट्रपति कमला हैरिस और विदेश मंत्री ब्लिंकन को भेजा किंतु सऊदी अरब के युवराज सलमान पर उनकी विगत कड़ी टिप्पणी से इस्लामिक जगत के सबसे ताकतवर नेता की नाराजगी अभी भी कायम है। यह सब बताता है कि, हमारा वास्ता ऐसे अमेरिकी राष्ट्रपति से है जो तुर्श और यहां तक कि अधीर स्वभाव वाले हैं। हालांकि बाइडेन के पास चीन से बरतने को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश एवं रक्षा के रूप में बहुत अनुभवी और काबिल निजी सलाहकार हैं। इसके अलावा, कर्ट कैम्पबेल, जो कि व्हाइट हाउस में हिंद-प्रशांत महासागरीय मामलों के समन्वयक हैं, इस क्षेत्र में चीन से बनी चुनौतियों पर उनका नजरिया एकदम स्पष्ट और यथार्थवादी बताया जाता है।

यूं तो राष्ट्रपति बाइडेन की पसंदगी और नापसंदगियां खुले रूप में सर्वविदित हैं किंतु पाकिस्तानी फौजी जनरलों, खासकर चार सितारा, के प्रति विशेष लगाव एक छिपा पहलू है। हालांकि मौजूदा सेनाध्यक्ष जनरल बाजवा की बाइडेन से मुलाकात आधिकारिक यात्रा के जरिए आज तक नहीं हुई है, लेकिन जुलाई 2019 में प्रधानमंत्री इमरान खान की वाशिंगटन यात्रा में राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप से मिले थे। अपने पूर्ववर्ती से उलट राष्ट्रपति बाइडेन को पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान सख्त नापसंद है। इमरान खान की मास्को यात्रा के दौरान रूसी फौज की यूक्रेन पर चढ़ाई से इसमें और इजाफा होता गया। इमरान खान को लेकर बाइडेन की नाराजगी इस्लामाबाद स्थित अमेरिकी राजदूत के जरिए बाकायदा पाकिस्तान को बता दी गई। लेकिन जो बात कम मालूम है कि असल वजह है बाइडेन का पाकिस्तानी सेना के लिए विशेष लगाव। इसके लिए दो घटनाएं जानना रोचक होगा।

राजनयिक प्रोटोकॉल में किसी देश के उप-राष्ट्रपति का रुतबा वहां के प्रधानमंत्री से ऊपर होता है। फिर भी, 13 जनवरी 2011 के दिन राष्ट्रपति बाइडेन, जो पाकिस्तान के दौरे पर थे, अपने मेजबान तत्कालीन प्रधानमंत्री युसूफ रज़ा गिलानी के इस्लामाबाद स्थित आधिकारिक आवास से सड़क मार्ग के जरिए 3 घंटे का सफर कर रावलपिंडी स्थित पाक सेना मुख्यालय में तत्कालीन सेनाध्यक्ष अशफाक परवेज कयानी से भेंट करने पहुंचे। बाइडेन-कयानी की इस मुलाकात के बमुश्किल 4 महीने बाद 2 मई 2011 को अमेरिकी नौसेना के स्पेशल वारफेयर डेवलपमेंट ग्रुप के कमांडोज़ ने एबटाबाद के छावनी इलाके से सटी रिहायशी बस्ती के एक घर पर धावा बोल विश्व के सबसे वांछित आतंकवादी ओसामा बिन लादेन को मार गिराया। पाकिस्तानी सेना के प्रति बाइडेन का स्नेह आगे भी कायम रहा। आगे उन्होंने, 15 नवम्बर 2015 को व्हाइट हाउस के रूजवेल्ट कक्ष में अगले सेनाध्यक्ष राहिल शरीफ का अभूतपूर्व स्वागत किया। व्हाइट हाउस से जारी विज्ञप्ति में बाइडेन ने कहा 'आतंकरोधी, आर्थिक और क्षेत्रीय सुरक्षा पर हमारी साझा चिंताओं के निवारण के लिए अमेरिका पाकिस्तान के साथ सुदृढ़ साझेदारी बनाने में पुनः इच्छा व्यक्त करता है'। इसके बरक्स, हालांकि बाइडेन ने इमरान खान के प्रति अपनी नापसंदगी गुप्त नहीं रखी और अब अमेरिका शाहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली किंतु कुछ डांवांडोल संयुक्त सरकार के साथ दोस्ताना रिश्ते बनाने में व्यस्त है।

जी.पार्थसारथी

इन जटिलताओं और विरोधाभासी अमेरिकी नीतियों के बावजूद, अमेरिका-भारत के बीच द्विपक्षीय संबंधों को विस्तार देने और क्वाड संगठन में सहयोग सुदृढ़ करने पर स्पष्ट सहमति है। इसका पता टोक्यो क्वाड शिखर सम्मेलन को अहमियत देने से चलता है। हिंद-प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में चीन की इलाकाई महत्वाकांक्षा और सामरिक उद्देश्यों से कारगर संतुलन बैठाने में क्वाड की भूमिका को मान्यता मिली है। आसियान संगठन के सदस्य जैसे कि जापान, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, इंडोनेशिया और फिलीपींस के साथ मिलकर सुरक्षा सहयोग पर विस्तृत योजना पर काम करने की जरूरत क्वाड को है। चूंकि शेष आसियान सदस्य चीन के साथ अपने रिश्ते कायम रखने के इच्छुक हैं, इसलिए उसके विरुद्ध जाएंगे, यह मुश्किल है। इसके अलावा, न केवल क्वाड संगठन के सदस्यों के बीच और ज्यादा आर्थिक सहयोग बढ़ाने की जरूरत है बल्कि इसको विस्तार देते हुए हिंद-प्रशांत महासागरीय क्षेत्र तक ले जाएं।

टूटते संबंध, बढ़ता अवसाद

मनुष्य जिस तीव्र गति से उन्नति कर रहा है, उसी गति से उसके संबंध पीछे छूटते जा रहे हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं की बढ़ती इच्छाओं के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। माता-पिता बड़ी लगन से अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। उन्हें उच्च शिक्षा दिलाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। परिवार में लड़कियां हैं, तो वे विवाह के पश्चात ससुराल चली जाती हैं और लड़के नौकरी की खोज में बड़े शहरों में चले जाते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था में माता-पिता अकेले रह जाते हैं। इसी प्रकार शहरों में उनके बेटे भी अकेले हो जाते हैं।

संयुक्त परिवार टूटने के कारण एकल परिवार बढ़ते जा रहे हैं। एकल परिवारों के कारण संबंध टूट रहे हैं। संयुक्त परिवारों में बहुत से रिश्ते होते थे। दादा-दादी, ताया-ताई, चाचा-चाची, बुआ-फूफा, नाना-नानी, मामा-मामी, मौसी-मौसा तथा उनके बच्चे अर्थात बहुत से भाई-बहन। बच्चे बचपन से ही इन सभी संबंधों को जानते थे, परन्तु अब एकल परिवारों में माता-पिता और उनके दो या एक बच्चे ही हैं. संयुक्त परिवार टूटने के अनेक कारण हैं। रोजगार के अतिरिक्त परिवार के सदस्यों में बढ़ते मतभेद, कटुता एवं स्वार्थ आदि के कारण भी एकल परिवार बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति नितांत अकेला पड़ता जा रहा है। संयुक्त परिवार में समस्याएं सांझी होती थीं। व्यक्ति किसी कठिनाई या समस्या होने पर परिवार के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श कर लेता था। इस प्रकार उसे समस्या का समाधान घर में ही मिल जाता था।

संयुक्त परिवार के बहुत से लाभ हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य की सुरक्षा का दायित्व सबका होता है। किसी भी सदस्य की समस्या पूरे परिवार की होती है। यदि किसी को पैसे आदि की आवश्यकता है, तो पैसे बाहर किसी से मांगने नहीं पड़ते। परिवार के सदस्य ही मिलजुल कर सहयोग कर देते हैं। परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण घर और बाहर के कार्यों का विभाजन हो जाता है। प्रत्येक सदस्य अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार कार्य कर लेता है तथा अन्य कार्यों से मुक्त रहता है। ऐसे में उसे अपने लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवार में रसोई एक होने के कारण खर्च भी कम हो जाता है। उदाहरण के लिए दो या तीन एकल परिवार यदि संयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं, तो उन्हें अधिक सामान की आवश्यकता होगी। थोक में अधिक सामान लेने पर वह सस्ता पड़ता है। इसी प्रकार तीन के बजाय एक ही फ्रिज से काम चल जाता है। ऐसी ही और भी चीजें हैं। परिवार के किसी सदस्य के बीमार होने पर उसकी ठीक से देखभाल हो जाती है। परिवार के सदस्य साथ रहते हैं, तो उनमें भावनात्मक लगाव भी बना रहता है। इसके अतिरिक्त बच्चों का पालन-पोषण भी भली-भांति आसानी से हो जाता है। उनमें अच्छे संस्कार पैदा होते हैं। वे यह भी सीख जाते हैं कि किस व्यक्ति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। इसमें बड़ों का सम्मान करना, अपनी आयु के लोगों के साथ मित्रवत व्यवहार करना तथा छोटों से स्नेह रखना आदि सम्मिलित हैं।

आज परिस्थितियां पृथक हैं। मनुष्य किसी भी कठिनाई या किसी संकट के समय स्वयं को अकेला ही पाता है। यदि परिवार में महिला का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, तो तब भी उसे घर का सारा कार्य स्वयं करना पड़ता है, जबकि संयुक्त परिवार में अन्य महिलाएं होने के कारण उसे आराम करने का समय मिल जाता था। साथ ही उसकी भी उचित प्रकार से देखभाल भी हो जाती थी।

एकल परिवार में अकेले पड़ जाने के कारण व्यक्ति अवसाद का शिकार हो जाता है। अवसाद एक मानसिक रोग है। इस अवस्था में व्यक्ति स्वयं को निराश अनुभव करता है। वह स्वयं को अत्यधिक लाचार समझने लगता है। ऐसी स्थिति में प्रसन्नता एवं आशा उसे व्यर्थ लगती है। वे अपने आप में गूम रहने लगता है। वह किसी से बात करना पसंद नहीं करता। हर समय चिड़चिड़ा रहता है। यदि कोई उससे बात करने का प्रयास करता है, तो वे क्रोधित हो जाता है। कभी वह उसके साथ असभ्य अथवा उग्र व्यवहार भी करता है। मनोचिकित्सकों के अनुसार अवसाद के भौतिक कारण भी होते हैं, जिनमें आनुवांशिकता, कुपोषण, गंभीर रोग, नशा, कार्य का बोझ, अप्रिय स्थितियां आदि प्रमुख हैं. अवसाद की अधिकता होने पर व्यक्ति आत्महत्या तक कर लेता है। अवसाद के कारण आत्महत्या करने के अप्रिय समाचार सुनने को मिलते रहते हैं। ऐसे विचलित करने वाले समाचार भी मिलते हैं कि, अमुक व्यक्ति ने सपरिवार आत्महत्या कर ली या परिवार के सदस्यों की हत्या करने के पश्चात स्वयं भी आत्महत्या कर ली।

कोरोना काल में जहां संयुक्त परिवारों के लोग एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर रहे, वहीं एकल परिवारों के लोग अवसाद का शिकार होने लगे। 'द लैंसेट पब्लिक हेल्थ' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार कोरोना वायरस संक्रमण से ठीक हो चुके लोगों में अवसाद एवं घबराहट की शिकायतें देखने को मिल रही है। सात दिन या उससे अधिक समय तक कोरोना वायरस संक्रमण से पीड़ित रहे लोगों में अवसाद एवं घबराहट की दर उन लोगों की तुलना में अधिक थी, जो संक्रमित रोगी कभी अस्पताल में भर्ती नहीं हुए अर्थात वे अपने परिजनों के मध्य ही रहे। रिपोर्ट के अनुसार सार्स-कोव-2 संक्रमण वाले ऐसे रोगी जो अस्पताल में भर्ती हुए उनमें 16 महीने तक अवसाद के लक्षण देखे गए, परन्तु जिन रोगियों को अस्पताल में भर्ती नहीं होना पड़ा, उनमें अवसाद और घबराहट के लक्षण दो महीने के भीतर ही कम हो गए। सात दिनों या उससे अधिक समय तक बिस्तर पर रहने वाले लोगों में 16 महीने तक अवसाद और घबराहट की समस्या 50 से 60 प्रतिशत अधिक थी।

मनोचिकित्सकों के अनुसार अवसाद से निकलने के लिए आवश्यक है कि, व्यक्ति अपने परिजनों एवं मित्रों के साथ समय व्यतीत करे। किसी भी समस्या या संकट के समय परिजनों से बात करे। स्वयं को अकेला न समझे। सकारात्मक विचारों वाले व्यक्तियों से बात करे। परिजनों को भी चाहिए कि वे अवसादग्रस्त लोगों में सकारात्मक विचार पैदा करने का प्रयास करें, उन्हें अकेला न छोड़ें, क्योंकि ऐसे लोग आसानी से अपराध की ओर अग्रसर हो सकते हैं। उन्हें उनकी किसी भी नाकामी के लिए तानें न दें, अपितु उनको प्रोत्साहित करें तथा उनके आत्मविश्वास को बढ़ाएं।

डॉ. सौरभ मालवीय

वास्तव में आज तकनीकी ने समस्त संसार के लोगों को जितना समीप कर दिया है, उतना ही एक-दूसरे से दूर भी कर दिया है। मोबाइल के माध्यम से व्यक्ति क्षण भर में विदेश में बैठे व्यक्ति से भी बात कर लेता है। परन्तु मोबाइल के कारण ही लोगों को परिवार के सदस्यों से बात करने का समय नहीं मिल पाता। प्रत्येक स्थान पर लोग अपने मोबाइल के साथ व्यस्त दिखाई देते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति का अकेलापन बढ़ता जा रहा है। व्यक्ति व्यक्ति से दूर होता चला जा रहा है। आवश्यकता है सामूहिक संवाद की प्रत्यक्ष संवाद मन से भाव से विचार से हमे जोड़ता है दुखः सुखः में सहायक होकर साथ होने की अनुभूति प्रदान करता है।

मध्यकालीन विसंगतियों के अस्त्र से असहिष्णुता

सत्ता और धर्मनिष्ठा उतने ही बेमेल हैं जितना भक्ति और अमर्यादित व्यवहार। फिर भी सत्ता की राजनीति धर्मनिष्ठा का इस्तेमाल अपनी वैधता बनाने के लिए करती है, जबकि धर्मनिष्ठा सत्ता का मुकाबला या उसे सहज कर सकने लायक नहीं होती।

एक धर्मनिष्ठ हिंदू के लिए कृष्ण एक अद्वितीय भगवान हैं, वह भावविभोर होकर शिशु रूप में भी कान्हा की उपासना करता है वह उनसे प्रीति रखता है और ठीक वैसी प्रेम-भावना जैसी कि राधा की अपने प्रिय कुंवर कृष्ण के लिए थी या जो 'राधा के कृष्ण'में है। कृष्ण की छवि विस्मयकारी सुदर्शन चक्र धारी सारथी की भी है और वह भी जिन्होंने गीता रूपी महाज्ञान दिया, वे एक दार्शनिक भी हैं, जो हमें निष्काम कर्म करना सिखाते हैं। इसलिए एक हिंदू के लिए उनकी मिथकीय जन्मभूमि का बहुत महत्व रहा है, मुझे अपनी मां को कृष्ण भक्तों के लिए पवित्रतम तीर्थस्थल पर ले जाने का मौका मिला। लेकिन मथुरा और वृंदावन की यात्रा के बाद उन्हें मायूसी हुई, शाही ईदगाह की वजह से नहीं। वास्तव में, उन्होंने तो यह तक गौर नहीं किया कि वहां मस्जिद है भी या नही। उनकी असहजता तो वहां घूम रहे आवारा जानवर, धूल-मिट्टी और गंदगी को लेकर थी। वे अपनी कल्पना वाले, मनोरम वातावरण के बीच कृष्ण की छवि को हकीकत के वृंदावन और यमुना के घाटों तक जाते कचरे भरे रास्तों में रख नहीं पा रही थीं। उन्हें अफसोस हुआ कि काश इस यात्रा के बारे न सोचतीं, क्योंकि मन-मंदिर में बना 'वृंदावन के कृष्ण' का पवित्र अक्स जो लोप हो गया था।

उम्मीद है, यमुना किनारे इस तीर्थ स्थल की जो हालत दो दशक पहले थी, उसमें सुधार हुआ होगा। तथापि एक आस्थावान हिंदू के लिए मथुरा में शाही ईदगाह की मौजूदगी उतनी ही गौण है जैसे कि वाराणसी में शिव के दर्शन करते वक्त ज्ञानवापी मस्जिद प्रत्यक्ष नहीं रहती है। अपने आराध्य से मिलाप के आनन्द में उन्हें तो केवल कृष्ण और शिव ही दिखाई देते हैं। लेकिन मौकापरस्त राजनेता या प्रतिकारी व्यक्ति को सिर्फ अपने पवित्रतम पूजा स्थलों में सिर उठाए विधर्मी ढांचा ही नज़र आता है, इसलिए जमींदोज़ करना चाहता है। यह नजरिए का सवाल है, कोई वही देखता है जो देखना चाहता या कोई वह जो देखने को मजबूर किया गया जाए, सत्ता या धर्मनिष्ठा। उन्हें दिखाई देता है तो केवल वह मंजर जिसमें बाहरी आक्रांताओं की हमलावर लुटेरी फौज उनके पूर्वजों को बेइज्जत कर रही है और उनकी भूमि पर हजार साल राज किया, क्रूर विदेशी शासक जिन्होंने स्थानीय लोगों पर दमन किया, शक्तिहीन बनाया और तमाम अभिव्यक्तियों से महरूम रखा।

राष्ट्र की कल्पनाशीलता और स्मृति का सांप्रदायीकरण उस वक्त मुकम्मल तौर पर हो जाता है जब वर्चस्व रखने वाला राजनीतिक प्रचार तंत्र इस स्वयंसिद्ध सूत्र को मानने से इंकार दे कि आक्रांता शासक चाहे मुगल हो या ब्रिटिश। उसने भारत पर स्थानीय क्षत्रपों की मदद के बिना राज नहीं किया। जहां एक मजहब के प्रतिगामी सोच वाले औरंगजेब की तारीफ करते हैं वहीं बहुसंख्यक समुदाय के कट्टरवादी उतनी शिद्दत से भर्त्सना, लेकिन मजेदार यह कि दोनों ही राजपूताना के उन राजाओं पर चुप्पी साध लेते हैं जिन्होंने मुगल साम्राज्य के लिए लड़ाइयां लड़ीं और इलाके जीत कर दिए। विध्वंस और लूटमार प्रत्येक युद्ध का अंग है और जाहिर है पूजा स्थल निशाने पर हुआ करते थे। लेकिन फिर राजपूताना के राजा मथुरा में विध्वंस क्यों नहीं रोक पाए? आखिरकार पैदल भी चलकर आते तो मथुरा तक पहुंचने में दस दिन से भी कम लगते। मुगल सेना की साम्राज्यवादी मुहिमों में स्थानीय राजाओं की भागीदारी के इतिहास को मिटाने वाली योजना का उद्देश्य न केवल मध्यकालीन भारत की स्मृति का सांप्रदायीकरण करना है बल्कि 'कल्पनीय चोट' को हथियार भी बनाना है।

बतौर एक राजनीतिक हथियार स्मृति का सांप्रदायीकरण कानून के जरिए नहीं रोका जा सकता; बल्कि प्रतिकारी तत्वों की कार्य-सूची सिरे चढ़ाने की खातिर कानून को तोड़ा-मरोड़ा जा रहा है। यह स्पष्ट नहीं है कि इन दिनों व्हाट्सएप ग्रुपों में काशी-मथुरा को लेकर जो वीडियो प्रसारित हो रहे हैं, उनमें एक संप्रदाय के पूजास्थल तोड़ने वाली कहानी बारम्बार दोहराना क्या राजनीतिक माहौल बनाने की गर्ज से है या फिर यह आने वाले पूरे समय में उस संप्रदाय का चरित्र बदलने के लिए है।

वह हिंदू धर्म जो विदेशी आक्रमणों और धर्म-परिवर्तन के वक्त भी कायम रहा, एक ऐसा लचीला धर्म था जिसमें अंदरूनी सुधार निरंतर चलते रहते थे, जिसकी वहज से असहमति, स्व-संदेह, सुधार और अभिव्यक्ति के लिए जगह थी। इसी का इस्तेमाल गांधीजी ने हिंदू धर्म के अंदर प्रचलित छुआ-छूत प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाने के लिए किया। यही 'जगह' हरेक को बहुसंख्यक वर्ग की कुप्रथाओं पर सवाल उठाने की छूट भी देती है, इसमें अन्य संप्रदायों के कट्टर धर्मावलंबी और धर्म परिवर्तन करवाने वाले प्रचारक भी शामिल हैं। मध्य-कालीन सह-अस्तित्व के इन तमाम चिन्हों को, दासता का चिन्ह बताकर, मिटाने की नई कार्ययोजना से केवल असहिष्णुता ही बढ़ेगी।

सामाजिक तौर पर यह काम सिर्फ कटुता बढ़ाएगा जबकि राजनीतिक रूप में इससे सत्तारूढ़ दल के पास जो ताकत पहले से है उसमें बढ़ोतरी नहीं होगी। इसलिए हमारी मिली-जुली संस्कृति का स्वरूप बिगाड़ने वाले यह प्रयास क्यों? क्या यह यत्न बहुसंख्यकों में प्रतिकारी वर्ग की राजनीतिक जीत की घोषणा है? यदि ऐसा ही है तो हिंदू अपनी सहिष्णुता, समावेशी और सबको अंगीकार करने वाली विशेषताओं पर गर्व करना छोड़ दें। अब वसुधैव कुटुम्बकम सिद्धांत की बात खोखली लगने लगी है। बारास्ता अदालत इतिहास का अपराधीकरण करने के यह प्रयास कानून के राज का मखौल बना रहे हैं। एक प्रतिकारी से यह उम्मीद करना बेमानी है कि वह 'पूजास्थल कानून-1991' या अयोध्या पर सर्वोच्च न्यायालय के उस फैसले का सम्मान करेगा, जिसमें कहा गया है 'सार्वजनिक पूजास्थलों का चरित्र बचाए रखने को संसद ने साफ शब्दों में अधिदेश दिया है कि इतिहास और इसकी गलतियों का इस्तेमाल वर्तमान और भविष्य बिगाड़ने के औजार के रूप में नहीं हो सकता'।

जहां एक संगठन विशेष मध्यकालीन युद्धों की स्मृतियों का सांप्रदायिक करण कर रहा है वहीं विपक्ष लोगों से अपना संपर्क गंवा बैठा है, यहां तक कि वह अर्थपूर्ण तरीके से उन्हें यह तक नहीं बता पा रहा है कि अपने इतिहास से जुड़े रहकर पड़ोसियों से यथोचित संबंध बनाकर रखें। वजू-कुंड प्रकरण में नजरिया देशभर के शानदार मंदिरों की कलात्मकता को कमतर करने जैसा है। जिन्होंने ज्ञानवापी वजू कुण्ड का सर्वेक्षण किया है यदि वे तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर में गए होते तो पता रहता कि शिवलिंग किसे कहते हैं, तब शिवलिंग विचार का इस कदर अनादर न करते।

राजेश रामचंद्रन

विवादित स्थलों को लेने की आकांक्षा रखने वाला एक प्रतिकारी अपनी स्मृतियों के लुटेरे आक्रांता से अलग कैसे हुआ! या फिर वह अपने संप्रदाय के स्वरूप को नया आकार देना चाहता है और इसको अपने काल्पनिक दुश्मनों के उसी सांचे में ढालना चाहता है जिसमें वे आदिम प्रथा के हिस्सेदार बनकर विधर्मियों के पूजास्थल और मूर्तियां तोड़ते हैं? निःसंदेह, यह बात बतौर एक राष्ट्र भारत की छवि के अनुकूल नहीं कि मध्यकालीन पूजास्थलों का सर्वेक्षण करके कहीं शिवलिंग रूपी प्रतीक तो कहीं कृष्ण की भूमि का टुकड़ा ढूंढ़ने के लिए आदेश पाने को अदालत का रुख करता फिरे। आज हमारे समक्ष ध्यान देने को बहुत से अन्य मुद्दे हैं, मसलन, मुद्रा स्फीति पर लगाम, रोजगार सृजन और हमारी सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना। द इकोनॉमिस्ट पत्रिका का पिछले हफ्ते का मुखपृष्ठ सारी कहानी बयां करता है- 'वक्त भारत का- क्या मोदी मौका गंवा देंगे'?

सुगन देवी हॉस्पिटल इलाज के नाम पर दे रहा मरीजों को मौत

माही की गुंज, शुजालपुर। अजय राज केवट

शुजालपुर नगरवासी व आस-पास के क्षेत्रवासियों को लगातार प्राइवेट अस्पतालों की धन उगाही और लापरवाही से आमलोगों को जूझना पड़ रहा है। डॉक्टरों की लापरवाही से लगातार मरीजों की मौत हो रही है, लेकिन स्वास्थ विभाग इन प्राइवेट हॉस्पिटलों पर लगाम लगाने में नाकामयाब साबित हो रहे हैं।

ताजा घटनाक्रम सुगनदेवी हॉस्पिटल का है। जहा सुगन्देवी हॉस्पिटल के कर्मचारी को ही तोहफे में मौत दे दी गई। शुजालपुर क्षेत्र में एक निजी अस्पताल में डॉक्टरों की लापरवाही के कारण एक मरीज की मौत का मामला सामने आया था। जिसे सुगन देवी हॉस्पिटल संचालक जीवन मेवाडा द्वारा परिजनों को चंद पेसो में खरीद कर मामला रफा-दफा कर दिया।

जिला चिकित्सा अधिकारी राजू निदारिया ने हॉस्पिटल संचलको को आम जनता का खून चूसने का ठेका दे रखा है। चंद पेसो के चक्कर में ये जिला चिकत्सा अधिकारी किसी भी हद तक जा सकते है। कुछ ही दिनों पहले उज्जैन में प्रेमी का अपनी ही स्टाफ की नर्स के साथ किस करने का वीडियो तेजी से वायरल हुआ था, मगर साहब का तो प्रमोशन हो गया। वहीं इसकी घोर निंदा आम जनता द्वारा की गई कि ऐसे जिला चिकित्सा अधिकारी को शाजापुर में पदस्थ किया गया।

सरकार का आदेश साइड लाइन कर हॉस्पिटल अपनी गाईडलाइन चला रहे हैं। मरीजों की जेब और जान से खेल रहे है। प्राइवेट हॉस्पिटल द्वारा पहले तो आमजन को कम पेसो का लालच देकर भर्ती कर लिया जाता है बाद में ज्यादा पेसो की डिमांड की जाती है। वहीं दवाएं और जांच अतिरिक्त खर्च अलग और तो और ऑक्सीजन देकर तो मानो एहसान किया जा रहा है।

माही की गुंज की पड़ताल में हुए इस खुलासे से यह बात साफ हो गई है कि, सरकार के आदेश सिर्फ कागजों में हैं।

सरकार का दावा है कि, कोई लूट नही है। लेकिन कई हॉस्पिटल नियम का पालन नहीं कर रहे है। दवा और जांच के नाम पर मरीजों को लूटा जा रहा है। सरकार ने एक दिन का इलाज का जो रेट फिक्स किया है, उतना तो दवा का वसूल लिया जा रहा है।

मोटा कमीशन देता है जीवन मेवाड़ा

हॉस्पिटल संचालक आशा कार्यकर्ताओ को व 108 जननी एक्सप्रेस के ड्राइवरों को मोटा कमीशन देकर मरीजों को अपने हॉस्पिटल बुलाता है। पहले तो नार्मल डिलेवरी का बोल कर पेसेंट को भर्ती कर लेता है फिर डिलेवरी नॉर्मल को ऑपरेशन से कर के 30 हजार रुपए से 35 हजार रुपए तक मरीजों से वसूल कर लेता है। पैसे नही देने पर मरीजों के परिजनों के साथ अभर्द भाषा का उपयोग कर डराया और धमकाने लग जाता है व छुट्टी देने से मना कर दिया जाता है।

हॉस्पिटल में न तो पीने के पानी की सुविधा है न पार्किंग की और न एंबुलेंस की कोई सुविधा है। हॉस्पिटल में कोई डॉक्टर न होते हुए भी बहार के डॉक्टर से ऑपरेशन करवा दिया जाता है। न कोई ओटी स्टाफ हॉस्पिटल में पेसेंट दिखाने आते हैं। ओपीडी दिखाने के लिए दूसरी आयुर्वेदिक वाली मैडम को बुलवा लेते हैं। हॉस्पिटल में मेडिकल होकर अंदर से ही महंगे दामो में मेडिसिन दे दी जाती है।

सूत्रों के मुताबिक केदार सिंह मेवाडा ग्राम भेसरोद हॉस्पिटल का ही प्रचार के लिए आटो लेकर गया हुआ था तभी अचानक केदार सिंह की तबियत खराब हो जाने से हॉस्पिटल में परिजन लेकर आए पर वह कोई जिम्मेदार डॉक्टर न होने की वजह से केदार सिंह की मृत्यु हो गई। तभी केदार सिंह के परिजनो को चंद पैसे देकर डेड बॉडी परिजनो को थमा दी गई और बोला गया कि, इन्होंने पहले ही दम तोड दिया।

परिजनो ने बताया कि, केदार सिंह की हॉस्पिटल में शुगर चेक कराई थी तब सुगर बहुत हाय थी लेकिन झोला छाप खुद को बीएचएमएस एमडी बताने वाले ने उसी पेसेन्ट को डीएनएस लगवा दी। पेसेंट की सुगर और ज्यादा हाय हो गई।

पेसेंट के परिजन सक्षम न होने की वजह से मामला दबा दिया गया। जितने स्टाफ की डिग्री हॉस्पिटल में लगी है उनमे से एक भी स्टाफ हॉस्पिटल में मौजूद नही है। जिसका खामियाजा आम जनता को अपनी जान देकर चुकाना पड़ रहा है।

नए सिरे से जारी आरक्षण में कई लोगों के अरमानों पर फिरा पानी

माही की गूंज, मंदसौर।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद नए सिरे से हुए नगरीय निकायों के आरक्षण में कई लोगों के अरमान पर पानी फिर गया है। वहीं 2020 में हुए आरक्षण के बाद खुद को उम्मीदवार मानकर वार्डों में सक्रिय कुछ नेताओं व कार्यकर्ताओं के समीकरण भी गड़बड़ा गए हैं। आबादी के लिहाज से बड़े पिछड़ा वर्ग के आरक्षण ने जमावट भी बिगाड़ दी है और दावेदारों की हवा भी निकाल दी है। दिनभर चली आरक्षण प्रक्रिया में मंदसौर नगर पालिका के 40 वार्ड और नौ नगरीय निकायों के 135 वार्डों का आरक्षण नए सिरे से किया गया। इसमें सभी नगरीय निकायों में पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षित वार्डों की संख्या बढ़ गई है। इसका असर अनारक्षित व महिला आरक्षित वार्डों पर हुआ है। मंदसौर नपा के साथ ही जिले की नौ नगर परिषदों के 135 वार्डों के लिए आरक्षण की प्रक्रिया मंगलवार को कलेक्टोरेट सभागार में हुई। आरक्षण के बाद करीब आठ से 10 वार्डों में समीकरण बदल गए है। कहीं पर पुरुष की जगह महिला वार्ड हो गए थे तो कई वार्ड आरक्षण में वर्ग ही बदला गए हैं। जैसे-जैसे वार्डों की गोटियां खुलती रहीं, दावेदारों की धड़कने भी बढ़ती-घटती रही। नए आरक्षण के बाद कुछ वार्डों में अब तक शांत रहे लोगों के चेहरों पर चमक आ गई है। मंदसौर नपा की 40 सीटों पर पिछड़ा वर्ग को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है। मंगलवार को कलेक्टर गौतमसिंह, डा. जेके जैन सहित अन्य अधिकारियों की मौजूदगी में आरक्षण प्रक्रिया शुरू हुई। 2020 के आरक्षण को शून्यप मानकर पिछले चुनावों में हुए आरक्षण के आधार पर चक्रानुक्रम से आरक्षण हुआ।

गोर साहब, टीआई सुन लो, तुम्हारी ऐसी की तैसी कर देंगे- पूर्व ऊर्जा मंत्री

माही की गुंज, राजगढ़ (ब्यावरा)।

जिले के खिलचीपुर में कांग्रेस पार्टी द्वारा बिजली कटौती और भारी भरकम बिल के विरोध में धरना प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन में पूर्व ऊर्जा मंत्री प्रियव्रत सिंह ने संबोधन के दौरान अपना आपा खो दिया। उन्होंने मंच से ही एक अफसर का सरनेम लेकर और टीआई को खुलेआम धमकी दे डाली।

पूर्व ऊर्जा मंत्री ने कहा कि, पूर्व में खिलचीपुर में विशेष समुदाय के लोगों की गुमटियों पर आगजनी हुई थी, जिसमें अभी तक सिर्फ 2 लोगों को पकड़ा है। मैं पुलिस को चेता रहा हूं गोर साहब, टीआई सुन लो, तुम्हारी ऐसी की तैसी कर देंगे अगर खिलचीपुर का अमन चैन बिगड़ा तो। हमारे यहां अगर गतिविधि हुई और आप इन भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को बचाने की हरकत करोगे तो सही साठ कर देंगे। सब पर कार्रवाई करो जो दोषी है। यह भी देखों की इनके पीछे किन किन भाजपाई का हाथ है, उन्हें भी जेल में डालो। करवाई सही होनी चाहिए, नहीं तो सुन लो, आज के बाद कल आता है कल के बाद परसो फिर देखेंगे क्या होगा।

न्यायालय में पेशी के बाद लापता हुए व्यक्ति की मिली लाश

माही की गूंज, मंदसौर।

मंगलवार सुबह सुवासरा क्षेत्र में बसई चंबल नदी में एक युवक की लाश मिली। मृतक की पहचान उसके पर्स से मिले आधार कार्ड से योगेन्द्रसिंह उर्फ बंटी निवासी मंदसौर के रूप में हुई है। मृतक की सोमवार को मंदसौर न्यायालय में एक प्रकरण में पेशी थी, पेशी के बाद से ही वह लापता था। परिजन भी उसकी तलाश कर रहे थे। मंगलवार सुबह उसका शव चंबल में मिला, पुलिस ने शव बरामद कर उसे पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल पहुंचाया।

सुवासरा थाना प्रभारी शिवांशु मालवीय ने बताया कि, 31 वर्षीय योगेन्द्रसिंह उर्फ बंटी पुत्र नारायणसिंह सिसोदिया निवासी इंदिरा कॉलोनी मंदसौर का शव चंबल में नदी किनारे मिला। सूचना पर पुलिस पहुंची और शव बरामद किया। मृतक की जेब पर्स में मिले आधार कार्ड के माध्यम से मृतक की शिनाख्त हुई। मृतक के परिजनों को घटना की सूचना दी, इसके बाद मृतक का बड़ा भाई कृष्णपालसिंह और छोटे भाई भी मौके पर आए। दोनों भाईयों ने भी मृतक की पहचान की। मृतक के स्वजनों ने बताया कि योगेन्द्र की सोमवार को मंदसौर न्यायालय में पेशी थी, पेशी के बाद से ही वह घर पर नहीं आया था। वह मोबाइल और बाइक भी घर पर ही छोड़ गया था। हम उसकी तलाश कर रहे थे। चिकित्सकों के अनुसार मृतक की मौत डूबने से हुई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू की है।

4 हजार 800 किलो गुड व महुआ लहान तथा 15 लीटर हाथ भट्टी मदिरा जप्त

माही की गूंज, शाजापुर।

जिले में अवैध मदिरा के निर्माण, विक्रय, परिवहन, संग्रहण की रोकथाम हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत कलेक्टर दिनेश जैन के निर्देशन में एवं जिला आबकारी अधिकारी सुश्री मंदाकिनी दीक्षित के मार्गदर्शन में आज बेरछा क्षेत्र के रुड़की कंजर डेरे पर एसडीओपी भविष्य भास्कर व बेरछा व अन्य थाना बलों के साथ आबकारी विभाग द्वारा संयुक्त दबिश की गई। दबिश के दौरान तलाशी लेने पर लगभग 4 हजार 800 किलोग्राम गुड व महुआ लहान व 15 लीटर हाथ भट्टी मदिरा जब्त कर मध्य प्रदेश आबकारी अधिनियम के तहत 6 न्यायालयीन प्रकरण पंजीबद्ध किए गए।

पत्नी को सांप से डसवाने वाला पति पुलिस गिरफ्त में

माही की गूंज, मंदसौर।

पत्नी को जान से मारने के लिए सांप से डंसवाने वाले पति मोजीम अजमेरी को वायडीनगर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने सोमवार को आरोपित मोजीम को न्यायालय में पेश किया है, जहां से उसे दो दिन की रिमांड पर सौंपा गया है। पुलिस को अब मामले में सांप लाने वाले नीमच के दिनेश सहित दो अन्य आरोपियों की तलाश है। दिनेश और मोजीम की दोस्ती जोधपुर जेल में हुई थी, तब दोनों तस्करी एनडीपीएस के मामले में जेल में बंद थे।

वायडीनगर थाने के एसआइ विनय बुंदेला ने बताया कि, माल्याखेड़ी निवासी 30 वर्षीय हलीमा अजमेरी को जान से मारने के लिए सांप से डंसवाने वाले आरोपित 34 वर्षीय पति मोजीम बाबु अजमेरी निवासी माल्याखेड़ी को गिरफ्तार कर लिया है। मोजीम का दूसरी महिला से प्रेम संबंध था, इसके चलते दोनों पति-पत्नी के बीच विवाद होते थे। इसी विवाद से छुटकारा पाने के लिए मोजीम ने पत्नी हलीमा को जान से मारने के लिए 5 मई को अपने बड़े भाई काला पिता बाबु अजमेरी, रमेश निवासी नीमच सहित दो अन्य साथियों की मदद से एक सांप को अपने घर लेकर आया था। सांप ने मोजीम की पत्नी हलीमा के पैर पर दो बार डंसा था। महिला को जिला अस्पताल में उपचार के बाद हलीमा को उदयपुर रेफर किया गया था, जहां वह उपचारत है। पुलिस ने उसकी रिपोर्ट पर आरोपी पति, जेठ सहित पांच आरोपितों के खिलाफ हत्या करने की कोशिश का मामला दर्ज किया था। रविवार को पुलिस ने मामले में आरोपित मोजीम को गिरफ्तार किया और सोमवार को उसे न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे दो दिन की रिमांड पर सौंपा है।

जोधपुर जेल में हुई थी दोस्ती

मुजीम के नीमच निवासी रमेश सांप लेकर आया था। रमेश व माल्याखेड़ी निवासी मोजीम की मुलाकात राजस्थान की जोधपुर जेल में हुई थी। दोनों एनडीपीएस के मामले में जोधपुर जेल में बंद थे, इस दौरान दोनों की दोस्ती हुई थी। इसके बाद से ही दोनों एक-दूसरे के सम्पर्क में थे। मोजीम के कहने पर रमेश ने अपने साथियों से सांप मंगवाया था। पुलिस को अब रमेश और उसके अन्य साथियों की तलाश है।

पत्नी की हत्या करने के लिए बुलाया सांप, पति के साथ पांच पर मामला दर्ज

आबकारी विभाग द्वारा छह स्थानों पर दी दबिश

माही की गूंज, रतलाम।

सहायक आयुक्त आबकारी श्रीमती नीरजा श्रीवास्तव के निर्देशन एवं प्रभारी सहायक जिला आबकारी अधिकारी आरसी बारोड़ व आबकारी नियंत्रण कक्ष एमएल मांडरे के मार्गदर्शन में आबकारी वृत्त रतलाम 'स' प्रभारी पुष्पराज सिंह द्वारा मुखबिर सूचना पर 6 स्थानों पर दबिश दी गई।दबिश में बसंतीलाल पिता वर्दीचंद टांक शहर सराय रतलाम से 30 पाव मदिरा, जशोदा पति शिवा निवासी नंदलाई से 8 लीटर हाथभट्टी, आत्माराम पिता बालू मचार नंदलई से 20 लीटर हाथभट्टी, गुलारीपाड़ा रतलाम में शकुन्तला पति कैलाश, राधेश्याम पिता मोहन तथा राधाबाईपति शांतिलाल के घर तलाशी लेने पर अवैध शराब नही मिली।

आरोपियों के विरूद्ध मप्र आबकारी अधिनियम की धारा 34 (1) के तहत 3 प्रकरण कायम किए। प्रकरण में कुल मदिरा 28 लीटर हाथ भट्टी मदिरा व 30 पाव देशी मदिरा अनुमानित कीमत 8 हजार सौ रुपए है।

उक्त कार्रवाई में सहायक जिला आबकारी अधिकारी एनआर वास्कले, विजय मेड़ा, आबकारी उप निरीक्षक अशोक दवे, वंदना अग्रवाल, चेतन वैद, संतोष मंडलोई, मीनाक्षी रेवाले, आबकारी आरक्षक भगवती सोलंकी, बनसिंह अहेरे, भावना खोड़े, पंकज पोरवाल का योगदान रहा।

जनहानी से बचाव के लिए दामिनी एप्प का करे उपयोग- कलेक्टर श्री जैन

माही की गूंज, शाजापुर।

जनहानी से बचाव के लिए दामिनी एप्प डाउनलोड करवाएं। उक्त निर्देश कलेक्टर दिनेश जैन ने विभागीय समन्वय एवं समयसीमा पत्रों की समीक्षा बैठक में दिए। इस मौके पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती मिशा सिंह, अपर कलेक्टर श्रीमती मंजूषा विक्रांत राय, संयुक्त कलेक्टर नरेन्द्रनाथ पाण्डेय, डिप्टी कलेक्टर अजीत कुमार श्रीवास्तव सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

बैठक में कलेक्टर श्री जैन ने एसएलआर को निर्देश दिये कि, ग्रामीण क्षेत्रों में पदस्थ राजस्व अधिकारी, शिक्षकों, सचिव, पटवारी आदि से दामिनी एप्प डाउनलोड करवाएं, जिससे बिजली गिरने से पूर्व की जानकारी ग्रामीणों को देकर जनहानि होने से रोका जा सके। उन्होंने नगर पालिका सीएमओ को वर्षाकाल के पूर्व शहरी क्षेत्रों के जीर्ण-शीर्ण भवनों, जर्जर पेड़ों आदि को पूर्व से ही चिंहांकित कर हटवाने एवं जनपद पंचायत सीईओ, राजस्व अधिकारी, पटवारी, सचिव, खनिज अधिकारी को निर्देश दिये कि ग्रामीण क्षेत्रों में खुले कुएं, खदाने, खतरनाक गड्ढों आदि को खुला न छोड़ें, उनकी तारफेंसिंग कर बाउण्ड्री करवाएं। साथ ही उन्होंने निर्देश दिये कि किसी प्रकार की जनहानी अथवा घटना होने पर संबंधित अधिकारियों के विरूद्ध कार्रवाई की जायेगी।

आयुष्मान कार्ड बनाने के संबंध में कलेक्टर ने सीएमएचओ डॉ. आर निदारिया को निर्देश दिए कि, आयुष्मान कार्ड बनने से शेष रहे पात्र लोगों के कार्ड अनिवार्यतः बनवाएं। इसी तरह शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम में प्रगति लाने के निर्देश कलेक्टर ने दिये।

कलेक्टर ने उपसंचालक पशु चिकित्सा डॉ. एके सिंह को निर्देश दिये कि, किसानों के क्रेडिट कार्ड बनवाने की कार्रवाई तेजी से संपादित कराएं। गौशालाओं में पशुओं के लिए चारे एवं पानी का प्रबंध कराएं। महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती सुषमा भदौरिया को कलेक्टर ने पीएम केयर्स चिल्ड्रन स्किम के क्रियान्वयन के निर्देश दिये। साथ ही बाल विवाहों के रोकथाम के लिए भी कलेक्टर ने कहा। दुर्घटनाओं की रोकथाम एवं यातायात नियमों के पालन के लिए सिग्नल तोड़ने वालों के विरूद्ध चालानी कार्रवाई करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने श्रम योगी मानधन योजना, प्रधानमंत्री स्वनिधि एवं मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्रेता योजनांतर्गत स्वीकृत प्रकरणों तथा जिले में जनभागीदारी से निर्मित किये जा रहे अमृत सरोवर एवं जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार के कार्य की समीक्षा भी की। कलेक्टर ने पीएचई विभाग के श्री डामोर को निर्देश दिये कि ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल संबंधी शिकायत प्राप्त होने पर तुरंत निराकरण करें, इसके लिए कन्ट्रोल रूम

24 घंटे काम कर रहा है अथवा नहीं, इसकी भी मॉनिटरिंग करें। बंद पड़े हैंडपंप की मरम्मत कराएं। जहां पेयजल का स्त्रोत है, वहां से ग्रामों को पेयजल सप्लाई करें। नगरपालिका सीएमओ सीएमओ चीलर नदी की सफाई 15 दिवस में करवाएं। साथ ही उन्होंने कहा कि वार्डों में स्वच्छ पेयजल सप्लाई हो, इसके लिए पेयजल की जाँच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करें। साथ ही उन्होंने शहर की साफ-सफाई कराने के भी निर्देश दिये।

इस मौके पर अपर कलेक्टर श्रीमती मंजूषा विक्रांत राय ने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन के तहत विभागों को प्राप्त शिकायतों के निराकरण की समीक्षा की।

शहर की तंग गलियों के निवासी आश्वस्त रहें, अब दोबारा उपद्रव नहीं होने देंगे- कलेक्टर

माही की गूंज, खरगोन।

कलेक्टर कुमार पुरुषोत्तम और एसपी धर्मवीरसिंह यादव ने लगातार तीसरे दिन सोमवार रात में भी गस्त की। दोनों अधिकारी अपने-अपने अमले के साथ उन स्थानों तक गए और निवासियों से बात की। जो शहर की सबसे तंग गलियों के रूप में जानी जाती है। साथ ही ये वो जगह है जहां के वीडियो वायरल हुए है।

कलेक्टर कुमार ने भाटवाड़ी के निवासी से चर्चा करते हुए कहा कि, हम भरोसा दिलाने आए हैं। अब दोबारा नहीं होने देंगे। आप निश्चिन्त रहें। जिन लोगों के बदमाशी की है वो जिंदगीभर पछतायेंगे। कार्रवाई इतनी जबरजस्त होगी।

आमजन प्रशासन का प्रतिनिधि

नवागत कलेक्टर श्री कुमार और एसपी श्री यादव सोमवार को फिर दंगा प्रभावित इलाकों में नागरिकों से टोह लेने निकले। पोस्ट ऑफिस चौराहे से भाटवाड़ी और फिर टेकड़ी मोहल्ले में पहुँचे। यहां के निवासी आसिफ मिर्जा से नाम पूछा और काम के बारे में पूछा।

आसिफ ने कहा, मैं एक शिक्षक हूं। कलेक्टर श्री कुमार ने कहा, आप को हम प्रबुद्ध व्यक्ति मानते है। उस दिन ये सब हुआ आपके सामने यह सब ठीक नहीं है। कलेक्टर श्री कुमार ने आसिफ से कहा, सरकारी व्यक्ति की जिम्मेदारी ज्यादा होती है। अब से आप यहां पर प्रशासन के प्रतिनिधि है।

एसपी श्री यादव ने कहा कि, उस दिन का 3 मिनट का वीडियो देखा है। क्या अफरा-तफरी मची थी। सब इधर उधर भाग रहे थे। बताएं क्या सब हुआ था। हम यहां समझने आये है। वास्तव में क्या हुआ था। टेकड़ी में आसिफ से चर्चा करने के बाद दोनों अधिकारी भाटवाड़ी मोहल्ले में आधे घंटे तक निवासियों चर्चा की। निवासियों को आश्वस्त किया कि आगे अब सिर्फ कार्यवाही होना है। इनके बाद मियांमान मोहल्ले में मर्कश मस्जिद के पास तंग गली में करी 45 मिनट तक निवासियों से चर्चा की। यहां से सीधे गलियों से होकर मोहन टॉकीज की ओर निकले। दोनों अधिकारियों ने करीब डेढ़ घण्टे तक शहर का भ्रमण किया।

गौरव महोत्सव के दौरान आयोजित होगा तंबाकू निषेध दिवस

माही की गूंज, बड़वानी।

तंबाकू का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यह सर्वविदित लिखित चेतावनी सहज ही तंबाकू उत्पादों पर लिखी और दिखाई देती है। उसके बाद भी मानव मन है कि मानता ही नहीं जब तक कि कोई अनहोनी ना घटित हो जाए। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने और ओरल हेल्थ के प्रति जन चेतना लाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा 31 मई विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन गौरव दिवस के कार्यक्रम के स्थल पर किया जायेगा।

जनसुनवाई में आए आवेदनों का अधिकारी टीएल में देंगे जवाब

माही की गूंज, खरगोन।

नवागत कलेक्टर कुमार पुरुषोत्तम ने खरगोन में अपनी पहली जनसुनवाई की। जनसुनवाई के आवेदनकर्ताओं को सुनने के बाद कुछ शिकायतों में संबंधित अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि, इनका जवाब जल्द दे। कलेक्टर श्री कुमार द्वारा अन्य कई शिकायतों के निराकरण के लिए टीएल बैठक के लिए हस्तांतरित (मार्क) की है। जिन पर टीएल बैठक में अधिकारी जवाब देंगे। जबकि कोटाखुर्द की मूकबधिर लक्ष्मी बाई ने निःशक्तजन की पेंशन दिलाने के लिए कलेक्टर के समक्ष जनसुनवाई में उपस्थित हुई।

लक्ष्मी बाई के साथ आये व्यक्ति ने बताया कि, उन्हें पेंशन नहीं मिल रही है। कलेक्टर श्री कुमार ने सामाजिक न्याय विभाग के अधिकारी से शाम तक जवाब मांगा।

सामाजिक न्याय विभाग के गायकवाड़ ने बताया कि, कलेक्टर के निर्देशों पर लक्ष्मी बाई को तत्काल अस्पताल में मेडिकल प्रमाण पत्र के लिए जांच कराई गई। मूकबधिर लक्ष्मी की मंगलवार को डॉ. पाटिल द्वारा की जांच की गई। डॉ. पाटिल के अनुसार लक्ष्मी बाई निशक्तता 80 प्रतिशत है। योजना के अनुसार 40 प्रतिशत कमी होने पर पेंशन की पात्रता है। सामाजिक न्याय विभाग के श्री गायकवाड़ ने कहा कि अब लक्ष्मी को नियमानुसार पेंशन प्राप्त होगी।

कूटरचित डेवलपमेंट अग्रीमेंट के आधार पर फर्जी रूप से झूठे शपथ पत्र देकर शासन प्रशासन व भूखंड धारकों के साथ धोखाधड़ी के मामले में सनावद के राम और श्याम ने आवेदन प्रस्तुत किया। कलेक्टर श्री कुमार ने मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीएम बड़वाह को आवेदन मार्क कर मामले की जड़ तक पहुचने के निर्देश दिये है। एसडीएम बड़वाह इसका जवाब टीएल में कलेक्टर के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। एक अन्य आवेदन में प्रेमनगर बलवाड़ी के नरेंद्र कुमार यादव ने स्वीकृत पुलिया निर्माण के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है। कलेक्टर ने आरईएस को टीएल में मार्क किया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के तीन स्वयंसेवक करेंगे राष्ट्रीय शिविरों में सहभागिता

माही की गूंज, खरगोन।

राष्ट्रीय सेवा योजना शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरगोन के जिला संगठक डॉ. सुरेश अवासे ने बताया कि, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पूरे भारतवर्ष में राष्ट्रीय एकता शिविरों का आयोजन हो रहा है। जिसमें शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्वयं सेविका कु. संवेदना पंढाणे राष्ट्रीय एकता शिविर रायपुर (छत्तीसगढ़) जननायक टंट्यामामा शासकीय महाविद्यालय से विकास लोहारे राष्ट्रीय एकता शिविर बाघपथ क्षेत्रीय (उत्तर प्रदेश) और शासकीय महाविद्यालय बड़वाह से कु. वैशाली करिया राष्ट्रीय एकता शिविर मुंबई (महाराष्ट्र) के लिए चयन हुआ है। यह तीनों स्वयंसेवक आगामी 21 से 27 मार्च में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय शिविरों में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर व मप्र का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्राचार्य डॉ. डीडी महाजन ने कहा कि, यह जिले के लिए बड़ी उपलब्धि है। मैं राष्ट्रीय सेवा योजना के राष्ट्रीय शिविरों में चयनित सभी स्वयं सेवकों को बधाई और शुभकामनाएं दी। इस दौरान महिला इकाई कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुनैना चौहान, डॉ. शैल जोशी डॉ. आरएस देवड़ा डॉ. एसडी पाटीदार व स्वयंसेवक सावन धनगर ने हर्ष व्यक्त किया एवं सभी को शुभकामनाएं दी।

करियर सेल कार्यकर्ता की आर्ट देखकर मुग्ध हुए कलेक्टर

माही की गूंज, बड़वानी।

बहुत सुंदर चित्र बनाए हैं, यह आपका बहुत ही अच्छा हुनर है, आप अपनी इस कला को व्यावसायिक स्तर पर अपनाइये ताकि आप आय और प्रसिद्धी दोनों प्राप्त कर सकें। ये बातें शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा संचालित की गई अल्पावधि रोजगारोन्मुखी चित्रकला प्रशिक्षण कार्यशाला में धीरज शैलेंद्र सागोरे द्वारा बनाई गई कलाकृतियों का अवलोकन करते हुए बड़वानी जिले के कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा ने कहीं। उन्होंने राधा-कृष्ण की एक सुंदर पेंटिंग खरीदकर कलाकार विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया।

प्राचार्य डॉ. एनएल गुप्ता ने कहा कि, इस तरह की रचनात्मकता का कार्य कॅरियर सेल द्वारा ही किया जा सकता है। मुख्य प्रशिक्षक धीरज शैलेंद्र सागोरे की कला की कलेक्टर श्री वर्मा और अन्य उपस्थित प्रबुद्धजनों ने बहुत प्रशंसा की। कार्यकर्तागण प्रीति गुलवानिया, सलोनी शर्मा, किरण वर्मा, स्वाति यादव, अंकित काग, साक्षी परमार, उमा फूलमाली आदि ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यशाला में पच्चीस प्रशिक्षुओं ने निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त किया था। कार्यकर्ता प्रीति गुलवानिया एवं सलोनी शर्मा ने बताया कि बड़वानी गौरव उत्सव के अंतर्गत 25 से 31 मई तक इन पेंटिंग्स की प्रदर्शनी और बिक्री का आयोजन स्टॉल क्रमांक 41 एवं 42 पर की जाएगी।

सांसद, कलेक्टर एवं एसपी ने किया ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ

माही की गूंज, बड़वानी।

खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ लोकसभा सांसद गजेन्द्रसिंह पटेल, कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा एवं पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार शुक्ला द्वारा बुधवार को प्रातः शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोतर महाविद्यालय के खेल मैदान पर किया गया। इस दौरान जिला पंचायत सीओ अनिल कुमार डामोर, खेल अधिकारी रूपसिंह कलेश सहित बड़ी संख्या में खिलाड़ी उपस्थित थे। शिविर के शुभारंभ के दौरान सांसद, कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, जिला पंचायत सीईओ ने भी खिलाड़ियो के साथ सूर्य नमस्कार, योगा प्राणायम किया। खिलाड़ियों एवं अतिथियों को योगा, प्राणायाम जिला श्रम अधिकारी एवं योगा प्रशिक्षक केएस मुजाल्दा ने करवाया। योगा में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भी भाग लिया। इस दौरान अतिथियों ने खिलाड़ियों को विसिल बजाकर 50 मीटर की दौड़ भी लगवाई, जिससे वे वार्मअप होकर अच्छी तरह से प्रशिक्षण ले सके।

इस दौरान जनप्रतिनिधियो एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने युवाओं को खेल प्रशिक्षण के लिये प्रोत्साहित करते हुये बताया कि, खेलकूद से जहॉ शरीर चुस्त-दुरूस्त बना रहता है, वहीं जिन्दगी में हार-जीत की भावना से उपर उठकर अपनी मंजिल की तरफ बढ़ना सहज हो जाता है। इसलिये खिलाड़ी प्रशिक्षण के उपरान्त भी अपनी खेल गतिविधियों को जारी रखे। जिससे उनमें आने वाली समस्याओं से निजात पाते हुये आगे बढ़ने का जज्बा बना रहे। इस अवसर पर जिला खेल अधिकारी रूपसिंह कलेश ने बताया कि यह ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर जिला एवं विकासखण्ड स्तर पर प्रारंभ किये गये है। इसके तहत विकासखण्ड ठीकरी में फुटबाल एवं टेबल-टेनिस, विकासखण्ड राजपुर में फुटबाल एवं कबड्डी, विकासखण्ड सेंधवा में कराते व कबड्डी, विकासखण्ड पानसेमल में बास्केटबाल व कबड्डी, विकासखण्ड निवाली में एथलेटिक्स व व्हालीवाल, विकासखण्ड पाटी में एथलेटिक्स व कबड्डी में प्रशिक्षण दिया जायेगा। जबकि जिला मुख्यालय पर कबड्डी, फुटबाल, एथलेटिक्स, बेडमिंटन, योगा प्राणायाम का प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया है।

जिला पंचायत अध्यक्ष पद के आरक्षण कार्यक्रम की हुई घोषणा

माही की गूंज, खरगोन। पंचायत राज संचालनालय मध्यप्रदेश द्वारा त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के तहत जिला पंचायत अध्यक्ष पद के आरक्षण कार्यक्रम की घोषणा कर दी गई है। समस्त जिलों के कलेक्टर्स एवं जिला पंचायत सीईओ को पत्र जारी कर निर्देशित किया है कि, वह इसके बारे में सभी संबंधित लोगों को सूचित करें। पंचायत राज संचालनालय के संचालक अलोक कुमार सिंह ने मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम 1993 की धारा 32 एवं मध्यप्रदेश पंचायत (उप सरपंच, अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष) निर्वाचन नियम 1995 के तहत प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष पदों के लिए अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़े वर्ग की महिलओं तथा सभी वर्गों में महिलाओं के लिए आरक्षण की कार्यवाही दिनांक 31 मई दोपहर 12 बजे जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी संस्थान) भोपाल के ऑडिटोरियम में प्रारंभ होगी। इस संबंध में पंचायत राज संचालनालय के संचालक श्री कुमार सिंह ने समस्त कलेक्टर्स को निर्देशित किया है कि वह अपने-अपने जिलों में सूचना का प्रचार प्रसार कर करें। ताकि आरक्षण की कार्रवाई में इच्छुक जनप्रतिनिधि व व्यक्ति उपस्थित हो सके।

त्रि-स्तरीय पंचायत निर्वाचन के लिए नियुक्त किए झोनल अधिकारी

माही की गूंज, बड़वानी।

कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा ने त्रि-स्तरीय पंचायत निर्वाचन के लिये जनपद पंचायत वार झोनल अधिकारियों को नियुक्त कर उन्हें अपने झोनल के मतदान केन्द्रो पर सामग्री एवं मतदान दल को पहुंचाने एवं वापस लाने, मतदान के दिवस प्रति घण्टे की रिपोर्ट जिला स्तर पर प्रेषित करने की जिम्मेदारी सौपी है। स्थानीय जिला निर्वाचन कार्यालय से प्राप्त जानकारी अनुसार कलेक्टर ने जनपद पंचायत पाटी के लिये 22 झोनल अधिकारी, जनपद पंचायत पानसेमल के 16 झोनल अधिकारी, जनपद पंचायत निवाली के लिये 12 झोनल अधिकारी, जनपद पंचायत राजपुर के लिये 22 झोनल अधिकारी, जनपद पंचायत बड़वानी के लिये 23 झोनल अधिकारी, जनपद पंचायत ठीकरी के लिये 22 झोनल अधिकारी, जनपद पंचायत सेंधवा के लिये 40 झोनल अधिकारियों की नियुक्ति की है। कलेक्टर ने नियुक्त झोनल अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे अपने क्षेत्र के मतदान केन्द्रो का निरीक्षण कर तत्काल रिपोर्ट संबंधित तहसीलदार एवं पदेन रिटर्निंग आफिसर को सौपेंगे। जिससे सत्यापन के दौरान पाई गई कमियो को संबंधित रिटर्निंग आफिसर तत्काल दूर करवा सके।

निर्वाचन कार्यालय से प्राप्त जानकारी अनुसार जिला पंचायत सदस्य के नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने हेतु कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा रिटर्निंग अधिकारी एवं अधीक्षक भू-अभिलेख मुकेश मालवीय एवं जगनप्रसाद वास्कले सहायक रिटर्निंग अधिकारी होंगे। इसी प्रकार जनपद पंचायत बड़वानी के लिए तहसीलदार बड़वानी श्रीमति आशा परमार रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार पाटी संजय चैहान एवं सुश्री स्नेहलता मुजाल्दे को सहायक रिटर्निंग अधिकारी, जनपद पंचायत पाटी के लिए तहसीलदार पाटी यशपाल मुजाल्दा रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार पाटी जगदीश बिलगावे को सहायक रिटर्निंग अधिकारी, जनपद पंचायत राजपुर के लिए तहसीलदार राजपुर श्रीमती सीमा कलेश मौर्य रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार राजपुर महेशसिंह सोलंकी एवं सुश्री विशाखा चैहान को सहायक रिटर्निंग अधिकारी, जनपद पंचायत ठीकरी के लिए तहसीलदार अंजड़ भागीरथ वाखला रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार डॉ. मुन्ना अड़ एवं सुभाष अलावे को सहायक रिटर्निंग अधिकारी, जनपद पंचायत निवाली के लिए तहसीलदार निवाली श्रीमति स्वाती उपाध्याय रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार निवाली नरेन्द्र मुवेल एवं राहुल सोलंकी को सहायक रिटर्निंग अधिकारी, जनपद पंचायत सेंधवा के लिए प्रभारी तहसीलदार मनीष पाण्डे रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार वरला जगदीश रंधावा एवं नायब तहसीलदार सेंधवा भंवरसिंह चैहान को सहायक रिटर्निंग अधिकारी, जनपद पंचायत पानसेमल के लिए प्रभारी तहसीलदार पानसेमल राकेश सस्तिया रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार पानसेमल सुनिल सिसोदिया को सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया गया।

पर्वत पर खुदाई, तोड़फोड़, वृक्ष कटाई के विरोध में निकली विशाल रैली

माही की गूंज, खरगोन।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा आद्यगुरु शंकराचार्यजी की दीक्षा स्थली ओंकारेष्वर में 2 हजार 200 करोड़ रुपये की योजना बनाकर आद्य गुरु की 108 फिट ऊंची अष्ट धातु की प्रतिमा ओंकार मान्धाता पर्वत के मध्य स्थापित की जा रही है। साथ ही गार्डन संग्रहालय आदि भी बनाये जा रहे है। कार्य तेजी के साथ चल रहा है। मूर्ति स्थल पर गहरे गड्ढे किये गए है। बर्फानी आश्रम के पास से फोर लाइन रोड मूर्ति स्थल तक बनाया गया है। इसमें हजारो वृक्षो को काटा गया है। पहाड़ को खोदा गया है। जेसीबी व प्रोकलेंन जैसे भारी वाहन चलाये जा रहे है। योजना स्थल में आ रहे गरीबो के मकानों को हटाया जा रहै है। नर्मदा नदी पर अस्थाई पुल बनाया गया है जिससे नर्मदा की धारा अवरुद्ध हुई है। नावों के द्वारा संगम परिक्रमा बंद हो गई है। प्रधानमंत्री आवास के अंतर्गत बने मकानों को भी नोटिस दिए गए है। अद्वेत वेदांत विश्वविद्यालय कालोनी नर्मदा के दक्षिण तट गोदद पूरा में बनाई जाएंगी।

भारत हित रक्षा अभियान श्री परशुराम सेना व स्थानीय लोगो के द्वारा पर्वत पर खुदाई तोड़फोड़ वृक्ष कटाई का घोर विरोध किया जा रहा है। विगत दो माह से विरोध चल रहा है। ज्ञापन में एक लाख लोगों के हस्ताक्षर कराकर कमिश्नर को इंदौर में राष्ट्रपती, प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन दिया। दो दिन धरना इंदौर में दिया फिर ओंकारेष्वर पेदल यात्रा कर जन जाग्रति तीन दिन ओंकारेष्वर के जे पी चोक एवम पर्वत पर धरना दिया। 23 मई को खंडवा कलेक्टरेट के पास धरना दिया। 24 मई मंगलवार को मान्धाता थाने में एसडीएम चंदरसिंह सोलंकी को ज्ञापन देकर नगर में विशाल रैली निकाली। रैली में भारी संख्या में गरीब आदिवासी महिलाएं बच्चे सभी राजनीतिक दल के लोग हाथों में तख्ती लेकर नारे लगाते चल रहे थे।

नागरिको की मांग है कि, आदिगुरु की मूर्ति पर्वत पर न लगाते हुए नर्मदा नदी के किनारे या अन्यत्र लगाई जाए। ओंकार पर्वत शिव स्वरूप है इसकी परिक्रमा का धार्मिक महत्व है। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ नही की जाना चाहिए। गरीबो संतो के आश्रयो को तोड़ा नही जाना चाहिए। तीर्थ को तीर्थ रहने दे पर्यटन नही बनाये।

ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर का होगा आयोजन

माही की गूंज, अलीराजपुर।

प्रभारी कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती संस्कृति जैन के निर्देशानुसार ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन जिले के समस्त विकासखण्ड स्तर पर किया जाएगा। इस शिविर के माध्यम से बच्चों व युवा को क्रिकेट, कबड्डी, फुटबाल, व्हालीवॉल, आर्चरी, कराटे, एथलेटिक्स, बाक्सिंग आदि खेला का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

जिला खेल एवं युवा कल्याण अधिकारी श्रीमती संतरा निनामा ने बताया कि, मुख्यालय स्तर पर 4 खेलों का व विकासखण्ड स्तर पर 2 खेला का प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह प्रशिक्षण शिविर एक माह तक प्रातः साढ़े 6 से साढ़े 8 तक व शाम 5 बजे से 7 बजे तक जिले के समस्त विकासखण्ड स्तर पर दिया जाएगा। जिनकी आयु 8 से 20 वर्ष के बालक बालिका इस प्रशिक्षण में भाग ले सकते है। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य जिले के ग्रामीण अंचलों के बच्चों और युवा को सेहत व खेल प्रति उत्सुकता जागृत कर उन्हें खेल मैदान की ओर आकर्षित करना है।

घटिया पढ़ाई और कुप्रबंधन के कारण प्रदेश में फिसड्डी साबित हुआ हमारा जिला - महेश पटेल

माही की गूंज, अलीराजपुर।

गत दिनों राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा जारी की गई रैंकिंग में अलीराजपुर जिला प्राइमरी स्कूल और मिडिल स्कूल की पढ़ाई के मामले में प्रदेश में आखिर नंबर पर आया है। यह सब जिले में घटिया पढ़ाई का परिणाम है। इस संबंध में जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष महेश पटेल ने बताया कि, पहली से आठवीं तक के सरकारी स्कूलों के शैक्षणिक स्थिति, वित्तीय प्रबंधन, बच्चों के नामांकन उपस्थिति सहित सात बिंदुओं के आधार पर राज्य शिक्षा केंद्र ने जिले की रैंकिंग तय की है।जिसमे आदिवासी बहुल हमारा अलीराजपुर जिला मध्यप्रदेश में अंतिम पायदान पर है। यह बड़ी शर्मनाक स्थिति है। विभिन्न पैरामीटर्स के आधार पर अलीराजपुर 45.97 फीसदी अंक के साथ मध्य प्रदेश में 51 वे स्थान पर रहा है, जबकि हमारा पड़ोसी जिला झाबुआ इस रैंकिंग में 56.79 अंक के साथ 39 वे स्थान पर रहा है।

पटेल ने बताया कि, केंद्र से ओर प्रदेश से जिले में बच्चों की उत्कृष्ट शिक्षा के लिए करोड़ो रुपयों का बजट आता है परंतु अधिकारी कर्मचारी की मिलिभगत से यह बजट सब गोलमाल हो जाता है। इन बजट से जिले में शिक्षा की रैंकिंग तो नही सुधरी पर अधिकारियों कर्मचारियों की जेब की रैंकिंग जरूर बढ़ गई है। इसी का परिणाम है कि आज जिले को फिसड्डी पढाई होने का तमगा लगा है। जिले के

अनेक स्कूलों में शिक्षक नही है। स्कूले बन्द पड़ी है।ग्रामीण क्षेत्रो की अनेक स्कूले प्रभावशाली शिक्षकों ने ठेके पर दे दी है। उनकी एवज में दूसरे कमजोर लोग काम कर रहे है।जवाबदार जिला शिक्षा विभाग और ट्रायबल विभाग हाथ पर हाथ धरा बैठा है। उनको बच्चो की पढाई से कोई सरोकार नही है। बच्चो की उच्च शिक्षा में प्राइमरी ओर मिडिल स्कूल की पढाई नीव का पत्थर होती है, परंतु इस जिले में तो लापरवाह ओर कामचोर अधिकारी ओर शिक्षक बच्चो का भविष्य बिगाड़ने पर तुले हुए है।

पटेल ने बताया कि, बीते 17 वर्षो में शिक्षा के नाम पर करीब एक हजार करोड़ रुपये खर्च हो गए है। परंतु नतीजा आज सबके सामने है। शिक्षा क्षेत्र के बड़े विभाग प्रभारियों में भरोसे पर चल रहे है। सहायक आयुक्त, बीईओ, प्राचार्य, हेड मास्टर के पदों पर लंबे समय से प्रभारी लोग काम कर रहे है। जिन्हें बच्चो को पढाना चाहिए वो लोग कुर्सी पर जमे है और मलाई खा रहे है।इसके लिए प्रदेश सरकार भी पूरी तरह से दोषी है। वो क्यो नही इन पदों पर योग्य मूल पद वाले अधिकारियों की नियुक्ति कर रही है? प्राइमरी ओर मिडिल की पढ़ाई में फिसड्डी रहने पर जिला कांग्रेस इसका घोर विरोध ओर तीव्र भर्त्सना करती है। पटेल ने जिला प्रशासन को चेतावनी दी है की यदि जिले की शिक्षा व्यवस्था का ढर्रा नही सुधारा तो कांग्रेस सड़को पर उतरकर धरना आंदोलन करेगी।

डीजल-पेट्रोल के भाव कम होने से उपभोक्ताओं में हर्ष

प्रदेश सरकार वेट कम करें तो मिल सकती है और राहत

माही की गूंज, आम्बुआ।

सुबह के अखबार में पाठकों ने जैसे ही खबर पढ़ी की डीजल-पेट्रोल के भाव में कमी की गई है लोगों ने राहत की सांस ली। साथ ही यह भी विचार रखे कि, प्रदेश सरकार भी वेट कम करें ताकि भाव और अधिक कम होकर उपभोक्ताओं को राहत मिल सके।

डीजल-पेट्रोल उपभोक्ताओं के लिए कुछ राहत लेकर आई वित्त मंत्री श्रीमती सीतारमण ने पेट्रोल में 9 रुपए तथा डीजल 7 रुपए की कमी की घोषणा की। जिसके समाचार सुबह अखबारों में सुर्खियां बनी।

हमारे संवाददाता ने बाइक चालक दीपक परिहार, असलम मकरानी, हुसेन नजमी आदि से पूछा कि, पेट्रोल के भाव कम होने पर कैसा महसूस कर रहे हैं। सभी का कहना था कि, शायद पहली बार अचानक इतनी कमी भाव में की गई। कमी स्वागत योग्य है पर यदि प्रदेश सरकार वेट कम कर दे तो भाव और राहत देने वाले होंगे। डीजल के भाव में कमी पर बस मालिक विकास माहेश्वरी ट्रक चालक खुजामा बोहरा आदि ने भी भाव कम होने को अच्छा बताया। साथ ही यह भी कहा कि, अभी भाव और कम होना चाहिए तथा भाव में कमी और अधिक हो सकती है। डीजल-पेट्रोल के भाव कम होने पर महंगाई पर कितना असर पड़ेगा यह एक हफ्ते में पता चल सकेगा।

अपराधिक रिकॉर्डधारियों के शस्त्र लायसेंस होगें निरस्त

माही की गूंज, अलीराजपुर।

एसपी मनोज कुमार सिंह ने बताया कि, प्रभावी अपराध नियंत्रण तथा अपराधियों पर नकेल कसने के लिए अपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों को चिन्हित किए जानें का अभियान अलीराजपुर पुलिस के द्वारा विगत दिनों से चलाया हुआ है। इसी क्रम में अलीराजपुर पुलिस द्वारा दो दर्जन से अधिक अपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों को चिन्हित किया गया। जिनके पास लायसेंसी शस्त्र भी उपलब्ध् हैं तथा इनके द्वारा अपराध भी घटित किए गए हैं। इनकी सूची तैयार की जाकर इनके शस्त्र लायसेंस निरस्तीकरण की कार्रवाई हेतु प्रतिवेदन जिला दण्डाधिकारी अलीराजपुर को भेजा गया है। इसी अभियान की अगली कडी में जिलें के ऐसे और भी अपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों का रिकार्ड खंगाला जा रहा है, जिनके पास लायसेंसी शस्त्र प्रचलन में है तथा इनके द्वारा किसी भी प्रकार का अपराध घटित किया गया हो।

एसपी श्री कुमार सिंह ने बताया कि, अपराध एवं अपराधियों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए अलीराजपुर पुलिस हर सम्भव प्रयास कर रही है। अवैध रूप से शस्त्र रखनें वाले 66 अपराधियों पर कार्रवाई कर 20 आग्नैर एवं 46 धारदार अवैध शस्त्र जप्त किए हैं। जिलें के समस्त लायसेंसधारियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि, वे अपनें लायसेंसी शस्त्र का किसी भी प्रकार से गलत उपयोग न करें। यदि भविष्य में कोई भी शस्त्र लायसेंसधारी के द्वारा अपराध घटित किया जाता है तो उसके विरूद्ध भी कठोर कार्रवाई के तहत शस्त्र लायसेंस निरस्त करनें की कार्रवाई की जाएगी।

टॉय बैंक की हुई स्थापना

माही की गूंज, अलीराजपुर। प्रभारी कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती संस्कृति जैन ने बताया कि, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की मंशा अनुरूप जिले की समस्त आंगनवाडी केन्द्रो में जनसहयोग से खिलौने संग्रहित करने का अभियान जिला स्तर पर भी चलाए जा रहा है। उन्होने बताया कि, बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक विकास में खिलौनों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है और साथ ही आंगनवाडी केन्द्रो में बच्चों की संख्या में भी इजाफा होगा।

जिला कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास अधिकारी ने बताया कि, टॉय बैंक की स्थापना जिले के समस्त विकास खण्ड स्तर पर कि गई। इस अभियान के तहत अलीराजपुर नगरीय क्षेत्र में खिलौने संग्रहित करने का कार्य प्रारंभ भी किया गया। इस अभियान के तहत जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती अनिता नागर सिंह चौहान ने भाग लिया, उन्होने घर घर जाकर बच्चों के लिए खिलौने एकत्रित करने का प्रयास किया।

प्रभारी कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती संस्कृति जैन ने जिले प्रबुद्ध नागरिको से अपील करते हुए कहा कि, बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अप्रयुक्त व अच्छी स्थिति वाले खिलौने व पुस्तके आंगनवाडियों में प्रदान करने के लिए सहयोग करें। कोई भी नागरिक अपनी क्षमतानुसार खिलौने व पुस्तकें आंगनवाडी केन्द्र संचालन के समय या कार्यालयीन समय में जिले के समस्त विकास खण्ड स्थित एकीकृत बाल विकास परियोजना पर उपलब्ध करा सकते है।

टोल कर्मी के आगे बेबस वाहन चालकों से की जा रही अवैध वसूली

माही की गूंज, शाजापुर।

शुजालपुर की जनता टोलकर्मियों की मनमानी के आगे बेबस हैं। टोलकर्मी वाहन संचालक से बीच रोड पर स्टील चद्दर की गुमटी व हाथ में लकड़ी लेकर कर रहे अवैध वसूली कर रहे है। यातायात को सुरक्षित व सुगम बनाने के लिए बने हाईवे पर सुविधाओं के नाम पर टोल टैक्स लिया जाता है, लेकिन कर्मचारी अवैध वसूली कर रहे हैं।

ऐसी ही स्थिति शुजालपुर-सारंगपुर मार्ग के ग्राम अजनई के पास देखने को मिलेगी। वाहनों पर फास्टैग लगा होने के बावजूद जबरन स्टील चद्दर की गुमटी व साइड में 8 लोहे का ड्रम बीच सड़क पर रख कर नकदी वसूली की जा रही है। कर्मचारीयो द्वारा मनमानी से टोल कंपनी को लाखों का चूना लग रहा है। नकद भुगतान का विरोध करने पर चालकों से अभद्रता कर टोल कर्मी मारपीट पर भी आमादा हो जाते हैं। शुजालपुर-सारंगपुर मार्ग पर गड्डे ही गड्डे मिलेंगे, वही दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कोई इंतजाम नहीं किए गए है।

वाहन चालक गबबर खान ने बताया कि, उनके वाहन पर फास्टैग लगा हुआ है। टोल बूथ से वे 10 किलोमीटर के दायरे में ही रहते हैं उसके बावजूद जबरन उनसे नकद पैसे लिए गए। विरोध करने पर परेशान किया जाता है।

एक अन्य वाहन चालक ने बताया कि, सादे कपड़े में मौजूद रहने वाले टोलकर्मियों ने उनसे जबरन नकद भुगतान लिया और रसीद मांगने के बाद भी नहीं दी। तकरीबन एक घंटे तक टोल प्लाजा पर मौजूद रहने के दौरान टोलकर्मियों के मनमाने रवैये से चालकों को परेशान होते देखना आम बात है।

स्थानीय निवासी हसीन खा ने बताया कि, 24 घंटे टोल प्लाजा पर अवैध वसूली की जाती है। विरोध करने पर मारपीट की जाती है। वसूली के संबंध में टोल मैनेजर से बात करने का प्रयास किया गया तो कर्मियों ने बताया कि मैनेजर इस समय मौजूद नहीं हैं।

ट्रक यूनियन ने ने टोल टैक्स वसूली का किया विरोध

शुजालपुर के वाहनों से टोल वसूली पर ट्रक यूनियन संगठन के कार्यकर्ता नाराज हो गए। वही अजनाई टोल टैक्स पर जाकर इसका विरोध किया और बोला कि, हम 10 किलोमीटर के दायरे में आते हैं हमारी गाड़ियों का दिन में 4 राउंड लगता है। ऐसे में 280 रुपए एक बार के देंगे तो हमारे लिए क्या बचेगा। मगर टोलकर्मी अपनी मन मर्जी से बाज नही आ रहै है और मारपीट करने तक उतारू हो रहे है।

यूनियन अध्यक्ष अतुल अग्रवाल के साथ आम जनता का कहना है कि, स्थानीय लोगों से टोल टैक्स की वसूली बंद करने की मांग की गई है। भीड़ देख अकोदिया थाना प्रभारी लक्ष्मण सिंह देवड़ा ने मोर्चा संभाला व पब्लिक को शांत किया और वही टोल कर्मी को भी समझाई दी गई कि, वह यह चद्दर की गुमटी व ड्रम साइड से रख दे जब आपको व्यवस्था ठीक तरीके से हो जाए तब जनता से टोल टैक्स वसूला जाए। आप इस चद्दर की गुमटी में टोल टैक्स नहीं ले।

मई महा में टोल शुरू कर दिया गया है। टोल प्लाजा के कर्मी 8 किलोमीटर के वाहनों से भी टोल टैक्स के रूप में निजी व कामर्शियल वाहन से वसूल रहे हैं।

स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि, स्थानीय वाहनों से टैक्स वसूली टोल प्लाजा के कर्मियों की मनमानी को साबित करता है। जिले से पंजीकृत वाहन के स्वामी जब टैक्स देने में आनाकानी करते हैं तो वसूली में लगे कर्मी उनसे झगड़ा व मारपीट करने तक पर उतारू हो जाते हैं। ग्रामीणों ने कहा कि, जहां भी टोल प्लाजा स्थापित है, वहां स्थानीय व पास के वाहनों को सहूलियत मिलती है। जिला प्रशासन इस प्लाजा पर भी वही नियम लागू कराए। स्थानीय वाहन स्वामियों के आधार कार्ड व जिले से पंजीकृत वाहन नंबर को देखकर आने-जाने की अनुमति दिलाई जाए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो शुजालपुर वासी की अनिश्चित धरने के लिए बैठेंगे।

ट्रको से वसूले जा रहै 280 रुपए

टोल टैक्स पर सबके लिए नियम है मगर ऐसा यहा बिलकुल भी नहीं हो रहा। सिर्फ और सिर्फ ट्रक वालो से ही अवेध वसूली की जा रही है। बस कार फॉरविलर आदि अन्य वाहनों को जाने दिया जा रहा। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है ये...? जो समझ से परे है।

कई पीड़ित लोगो ने की सीएम हेल्पलाइन पर की शिकायत

टोल प्लाजा कर्मी की दादागिरी से परेशान होकर दर्जनो व्यक्ति ने मुख्यमंत्री सीएम हेल्पलाइन पर शिकायतें की मगर उसका जिला प्रशासन पर कोई भी असर नहीं पड़ रहा। जिसका खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ रहा है।

बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं पर लगाम लगाने की कवायद शुरू

माही की गूंज, अलीराजपुर/आम्बुआ।

बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के उद्देश्य से यातायात पुलिस जिले में लगातार यातायात जागरूकता के साथ ही यातायात नियमों के पालन के लिए प्रचार-प्रसार व समझाईश कार्यक्रम चला रही है। इसी कड़ी में पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार के दिशा निर्देशन में यातायात पुलिस द्वारा यातायात जागरूकता अभियान के तहत मंगलवार को यातायात प्रभारी सुभाष सतपड़िया के नेतृत्व में यातायात पुलिस का दल साप्ताहिक बाजार स्थल आम्बुआ पहुंचकर लाउड स्पीकर के माध्यम से बाजार स्थल तथा नगर में आदिवासी भाषा मे आम नागरिकों, राहगीरों, व्यापारियों को यातायात नियमों के पालन के लिए अपील की गई।

इस दौरान यातायात स्टॉफ द्वारा दुपहिया वाहन चालकों को अनिवार्य रूप से हेलमेट पहनने, तीन सवारी नहीं चलने, चारपाहिया वाहन चालकों को सीटबेल्ट पहनने, ओवर स्पीड में वाहन नहीं चलाने, शराब पीकर नशे की हालत में वाहन न चलाने, वाहन के ऊपर ना बैठे, ओवर लोड माल व सवारी नहीं भरने,

वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करने व नाबालिग बच्चों को वाहन चलाने न देने की समझाइश दी गई।

वाहनों के ऊपर बैठकर न जाए

यातायात प्रभारी सुभाष सतपड़िया ने बताया कि, पिछले दो वर्षों में जिले में घटित मृत्युकारित अधिकांश सड़क दुर्घटनाएं बाइक सवार व्यक्तियों के विरुद्ध हुई है जिसमें सभी मोटर साइकिल चालकों द्वारा हेलमेट का उपयोग नहीं किया गया था, जिसके फलस्वरूप सिर में आई चोट के कारण उनकी मौत हुई। यदि बाइक चालकों द्वारा हेलमेट का उपयोग किया गया होता तो निश्चित रूप से उनकी जिंदगी बच सकती थी। मोटर साइकिल चालकों से अपील की गई कि वे अनिवार्यतः हेलमेट का उपयोग करें। इस अवसर पर यातायात नियमों से संबंधित जानकारी साप्ताहिक बाजार में दी गई। यातायात प्रभारी सुभाष सतपड़िया, ओम प्रकाश पटेल, एचसी भाव सिंह, एचसी गुमान सिंह, इमरान खान मौजूद रहे।

खुली विद्युत डीपियां दुर्घटना को दे रही न्यौता

माही की गूंज, आम्बुआ।

विद्युत विभाग की लापरवाही कभी भी जानलेवा हो सकती है। कस्बा तथा कस्बे से बाहर आदि अनेक स्थानों पर ऐसी अनेक अनियमितता देखा जा सकती है। जिनसे मानव तथा पशुओं की जान को खतरा हो सकता है। मगर बिजली विभाग उदासीन बना बैठा रहकर दुर्घटना का इंतजार कर रहा है।

हम बात कर रहे हैं क्षेत्र में विद्युत प्रदाय हेतु लगाई गई विद्युत डीपीयों के नीचे लगे बोक्सों की, जिनमें न तो ताले लगते हैं और न ही ढक्कन लगाए जाते हैं। इनमें लगे कटआउट तथा वायर आदि खुले देखे जा सकते हैं। यह बॉक्स इतने नीचे होते हैं कि इनमें कोई भी 7-8 वर्ष का बच्चा हाथ डाल सकता है। ये ही नहीं जानवर मुंह डाल सकते हैं जिस कारण उन्हें भारी करंट लग सकता है तथा तत्काल जान भी जा सकती है। यह स्थिति आम्बुआ में हीं नहीं अपितु जिले भर में ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में देखी जा सकती है। जहां डीपी के नीचे लगे कट आउट आदि का बॉक्स खुला पड़ा रहता है। विद्युत विभाग बड़ी दुर्घटना का इंतजार करता लग रहा है। नागरिकों की मांग है कि, ऐसी खुली पेटियों पर तत्काल ताले आदि लगाकर मानव जीवन को सुरक्षित करने का प्रयास विद्युत विभाग को तत्काल करना चाहिए।

सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है

पुलिस बड़ी मछली को पकड़ने के बाद अपनी पीठ थपथपाए

माही की गूंज, खवासा।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का कहना था कि, बड़े-बड़े सपने देखना बुरी बात नहीं है। उनका युवाओं से कहना था कि, सपने देखो और सपने देखना चाहिए, सपने देखना बुरी बात नहीं है, लेकिन रात में देखे गए सपनों को पूरा करने के लिए दिन में ईमानदारी से प्रयास आवश्यक है। सफलता कड़ी मेहनत से प्राप्त होती है, सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। लेकिन वर्तमान डिजिटल युग में आज के युवाओं को अधीर बना दिया है। युवा न केवल समय से जल्दी सफलता प्राप्त करना चाहते हैं; बल्कि उन सफलताओं के लिए सही-गलत रास्ते में भेद भी नहीं कर पा रहे हैं। उन्हे हर चीज जल्दी चाहिए, महंगे मोबाइल और महंगी गाड़ियों की चाहत में युवा पथभ्रष्ट हो रहे हैं और इन सब में कहीं ना कहीं पालकों की भी गलती है। जो अपने युवा बेटों की गतिविधियों पर जानकर भी मौन है या यूं कहे कि, उन्हें पालकों का मौन समर्थन प्राप्त है।

हाल ही में खवासा के 4 संभ्रात परिवारों के नौजवानों को पुलिस ने ऑनलाइन सट्टा के नाम पर पूछताछ के लिए खवासा चौकी पर बुलाया और पूछताछ की जिसमें पुलिस द्वारा बताया गया कि, यह आम लोगों से ऊंची ब्याज दर पर पैसा लेते थे और उन्हें ऑनलाइन सट्टा गोवा केसीनो साईट पर लगाते थे। पुलिस को इनसे 4 मोबाइल और 3800 नगदी प्राप्त हुई, लेकिन पुलिस ने स्वयं ही अपनी पीठ थपथपाते हुए मोबाइल की कीमत को भी जोड़ कर 3,53,800 नगदी जप्त किया जाना बतला दिया। अगर पुलिस वास्तव में इस मामले में इतनी संवेदनशील है तो मामले की तह तक जाए और इस प्रकरण के मुख्य सरगना तक जाकर खुलासा करें।

कौन है खवासा के 4 युवा

इस मामले में पुलिस द्वारा बतलाए गए आरोपियों में अंकित रमेश कहार, जिला किसान कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष नंदलाल मैंण का पोत्र अर्पित संतोष मैंण, संदेश विजय वागरेचा और हर्षित निर्मल चौपड़ा बतलाए गए हैं। इन सभी की उम्र महज 18 से 21 वर्ष के बीच है, ये कोई शातिर अपराधी नहीं है न हीं इनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि इस प्रकार की है कि, यह कोई अपराध कर सके। ये महज भौतिक चकाचौंध के चक्कर में इस ऑनलाइन सट्टे में फस गए, महंगे आईफोन और महंगी लाइफस्टाइल की चाहत में ये इस कार्य को करने लगे।

क्या है ऑनलाइन सट्टा

इन दिनों इंटरनेट पर कई साइटों के माध्यम से तरह-तरह के लुभावने विज्ञापन चल रहे हैं। जिसके झांसे में देश के कई गांवों में कई अंकित, अर्पित, संदेश और हर्षित फंसे हैं और टीवी पर आने वाले विज्ञापन इन को आकर्षित कर रहे हैं। वर्तमान में चल रहे आईपीएल का ड्रीम 11 भी इसका एक उदाहरण है। जिसमें आज का युवा दो करोड़ की चाहत में फस रहा है और यह सब सरकार के संरक्षण में हो रहा है। इन विज्ञापनों को और कोई नहीं बल्कि युवाओं के आइकॉन नामी खिलाड़ी कर रहे हैं, जिससे आज का युवा आसानी से इस

जुआ-सटटा को आनलाईन वेबसाईट बनाकर इस तरह के कई जुआ खेल व्यक्ति के रूचि अनुसार खेले जाते है। इस गौरखधंधे में बडे शहरो के साथ अब ग्रामीण अचंल के युवा भी चगुल में फसते जा रहे है।

ऐसी सभी जुआ रूपी आनलाईन वेबसाईट पर जुआ में जितने वाले मेम्बर का कोड-आईडी के साथ विनर के रूप में वेबसाईट पर प्रसारित होता रहता है जिसे दिखा कर युवाओ को अपने चुंगल में फसाया जाता है।

आकर्षित हो रहा है।

खवासा में इस प्रकार गोवा साईट केसिनो पर सट्टे का मामला उजागर हुआ है। इसी प्रकार ग्रामीण अंचल से लेकर जिला, प्रदेश, देश-विदेश तक गोवा साईट की तरह कई साईटे बनाकर आज के युवाओं को गलत राह पर ले जाकर भविष्य को गर्त में ले जाया जा रहा है। जब माही की गूंज ने ऑनलाइन सट्टा रैकेट की वस्तुस्थिति जानने का प्रयास किया। तो कई चौंकाने वाली बातें सामने आई, गोवा साईट की तरह हयात साइड, वर्ल्ड ट्रीपल सेवन साइड, मुंबई आदि कई ऑनलाइन साईटे बनाकर इस गोरखधंधे को चलाया जा रहा है।

एक करोड़ तक बनती है यह ऑनलाइन साईट

जब माही की गूंज मामले में तह तक गया तो पता चला कि, विदेश से लेकर देश के बड़े शहरों के साथ अब खवासा व उससे छोटे ग्रामों तक यह गोरखधंधा चल रहा है। उक्त ऑनलाइन सट्टा के गोरखधंधे को संचालित करने के लिए इंदौर से लेकर कई बड़े शहरों के लोग दुबई व लंदन तक जा रहे हैं। जिसमें महीने के आधा समय विदेशों में रह रहे तो आधा समय भारत में रहकर बड़े पैमाने पर युवाओं को गिरफ्त में ले चुके हैं। यहां तक बताया जा रहा है कि, गोवा साईट हयात, वर्ल्ड ट्रिपल सेवन साईट, मुंबई आदि ऑनलाइन साईट की तरह सट्टा ऑनलाइन साईट बनाने के लिए एक करोड़ तक का खर्च आता है और यह वेबसाइट डिजाइन दिल्ली में अधिकांश रूप से बनाई जा रही है। उक्त वेबसाइट देश में चलने वाले सभी सट्टे, जुएं-चकरी, तीन पत्ती, क्रिकेट व्यक्ति खेल सकता है। जिसमें मुख्य रुप से सेशन गेम जिसमें क्रिकेट आदि गेमो में निर्धारित ओवर में कितने रन बनेंगे के साथ हार- जीत व आईपीएल आदि मैचो पर रुचि अनुसार सट्टा जुआ खेला जाता है। जिसमें प्रति 1 रुपया पर 1 पॉइंट के साथ ऑनलाइन सट्टा खेला जाता है। और वेबसाइट बनाने वाला मालिक उर्फ ऑनलाइन सट्टा चलाने वाला मुख्य सरगना अलग-अलग आईडी के साथ अलग-अलग व्यक्ति से सट्टा चलाने का पार्टनर रूपी आपसी एग्रीमेंट करते हैं, जिसमें 10 प्रतिशत से लेकर 80 प्रतिशत तक पार्टनर बनाकर खवासा जैसे छोटे गांवों तक यह कारोबार पहुंच चुका है।

पुलिस आखिर मुख्य आरोपियों के नाम क्यों नहीं बता रही....?

खवासा पुलिस ने अपराध दर्ज कर 7 के नाम दर्ज एफआईआर आईटी सेल एक्ट के अंतर्गत दर्ज की। लेकिन पुलिस 4 युवाओं के नाम प्रचारित कर रही है। मामले में मुख्य तीन आरोपी जिनके नाम नहीं बताकर मीडिया को भी खवासा पुलिस गुमराह कर रही है, मामले में थांदला टीआई से सभी आरोपियों के नाम जानना चाहा तो कौशल्या चौहान ने खवासा चौकी प्रभारी अशोक बघेल के द्वारा सभी आरोपियों के नाम दे दिए जाएंगे कहा, लेकिन खवासा चौकी प्रभारी ने नाम नहीं देते हुए, सिर्फ गुमराह करने का प्रयास किया है। जिससे साफ जाहिर होता है कि, उक्त गोरखधंधा पुलिस की जानकारी व सांठ-गांठ के साथ ही चल रहा था और बताया जा रहा है बाकी तीन मुख्य आरोपी है जिसमें दो थांदला के व एक परवलिया का होना बताया जा रहा है।

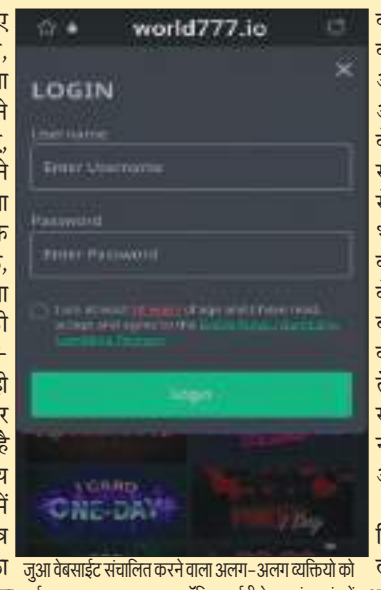

जुआ वेबसाईट संचालित करने वाला अलग-अलग व्यक्तियो को पार्टनर बनाकर अलग-अलग लॉगिन आईडी देकर गांव-गांव में इस गौरख धंधे को फैला चुंके है।

ग्राम में एक करोड़ से अधिक राशि की लेन-देन की हो रही चर्चा

उभरते युवाओं ने स्थानीय कुछ लालची किस्म के व्यक्तियों से संपर्क कर उन्हें भी लालच देकर एक करोड़ से अधिक की राशि का उधारी में लेन-देन कर चुके हैं। मामले में जब एक पुराने बर्तन के व्यापारी एवं अपने आप को पत्रकार कहलवाने के लिए एक पेपर की एजेंसी लेने वाला सुरेंद्र चोपड़ा का नाम ग्राम में चर्चा का विषय बना हुआ था। जिससे गूंज की चर्चा होने पर सुरेंद्र चोपड़ा कहता है कि, यह कोई सट्टा थोड़ी ही न थो ब्याज से पईसा लोगों से हर्षित लई रियो थो। हाई पर्पस प्रॉपर्टी ब्रोकर को देने के लिए ब्याज से पैसे लेते थे। ग्राम से करीब एक करोड़ के ऊपर की राशि लोगों से ले रखी है, आपसी लेन-देन कोई करता है तो उसमें किसकी क्या गलती है। मैंने पैसे नहीं दिए मेरा स्टेटमेंट मत छापना जो पत्रकार समाचार लिख रहा है, उसने चार लाख रूपये मांगे थे पर सेटिंग नहीं हो पाई यह बात हर्षित निर्मल चोपड़ा ने बताई थी। लोगों के पैसे बहुत लगे हुए हैं उनके पैसे निकल जाए कि, बात कह कर मेरे स्टेटमेंट मत छापना की बात सुरेंद्र चोपड़ा ने कही।

भटकते युवाओ का जिम्मेदार कौन...?

आज का युवा देश का भविष्य है। अगर आज का युवा गलत दिशा में जा रहा है या सफलता (विलासिता) के लिए कोई शॉर्टकट रास्ता अपना रहा है, तो इसमें न केवल परिवार... समाज... गांव... बल्कि देश के नीति नियंता भी जिम्मेदार है। घर का कोई सदस्य अगर गलत दिशा में जा रहा है, तो परिवार को चाहिए कि, वे उसे बैठकर समझाए उसे अपने भले और बुरे का ज्ञान दें। यह कहानी केवल खवासा के अंकित, अर्पित, संदेश और हर्षित की नहीं बल्कि देश के हर उस युवा की है जो अपना रास्ता भटक गए हैं। सरकार को भी चाहिए कि, वे भ्रामक विज्ञापनों पर रोक लगाये। साथ ही देश के उन तमाम सेलिब्रिटी को भी चाहिए कि, वे चंद रुपए के लिए देश की युवा पीढ़ी को गर्त में धकेलने से परहेज नहीं कर रहे, देशवासियों के प्यार और स्नेह से ही वे सेलिब्रिटी बने हैं और बदले में वे उन्हें गलत संदेश दे रहे हैं। देश के युवाओं को यह मानना होगा कि, जिस प्रकार हर कोई सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली और रोहित शर्मा नहीं बन सकता है। इसी प्रकार हर कोई अंबानी और अडानी भी नहीं बन सकता है। इसके लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है।

खवासा पुलिस ने इस मामले का खुलासा किया, जिसके लिए खवासा पुलिस निश्चयं ही बधाई की पात्र हैं। लेकिन क्या यह इनका बड़ा मामला है कि, पुलिस इन भटके हुए युवाओं को शातिर अपराधी व खुद को सुपर हीरो प्रचारित करने में जुटी है। अगर पुलिस को वास्तव में अपने आप को साबित करना है, तो वह पूरे रैकेट को आम जनता के सामने लाए और दूध का दूध और पानी का पानी करें। मुख्य आरोपी के नाम छुपा कर और इन युवाओं के नाम प्रचारित कर पुलिस क्या साबित करना चाह रही है...? पहले स्कूलों में एक प्रार्थना सिखाई जाती थी ÷वह शक्ति हमें दो दया निधे..... जिसमें एक लाइन थी जो है अटके, भूले, भटके, बिछड़े उनको तारे खुद तर जाए। इसका अमल करते हुए खवासा पुलिस को चाहिए कि, न केवल इन युवाओं को जो रास्ते से भटक गए उनको सही रास्ते पर लाए, वरन् खुद भी समाज में आदर्श प्रस्तुत करते हुए, जनसेवा- देशभक्ति का नारा सार्थक करें। ?

कब तक पूरी हो पाएगी बहादुर सागर तालाब को स्वच्छ व सुंदर बनाने की कल्पना.... ?

कलेक्टर की रूची, नपा को मार-मार कर हकीम बनाने की कवायद

माही की गूंज,झाबुआ। मुजम्मील मंसूरी

पिछले कई महीनों से शहर के बहादुर सागर तालाब को स्वच्छ और सुंदर बनाने की कावायद जारी है, लेकिन इसको लेकर दृढ़ निश्चय की कमी साफ देखी जा रही थी। क्योंकि पिछले दिनों तक इस तालाब को स्वच्छ व सुंदर बनाने वाली गेंद सिर्फ और सिर्फ नगर पालिका के पाले में थी। वर्षों से जमी जलकुंभी ने तालाब की सुंदरता पर पूरी तरह से बट्टा लगा दिया था। हालांकि नगरपालिका ने इस जलकुंभी को हटाने की कई बार मुहीम छेड़ी, लेकिन वह भी अधूरे प्रयासों के कारण नाकाम ही साबित हुई। मुहीम के बार-बार रूकने का नतीजा यह रहा कि, जलकुंभी ने पूरे तालाब पर अपना साम्राज्य कायम कर लिया। स्वच्छता रेकिंग में फिस्सडी साबित होने के बाद नगरपालिका के अमले ने फिर से बहादुर सागर तालाब की तरफ मुंह किया और फिर से जलकुंभी निकालने की कवायद शुरू हुई, लेकिन अब की बार ''पानी सिर से ऊपर था'', बावजूद इसके नगरपालिका की कड़ी मशक्कत और रुपये खर्च करने के बाद आधा ही तालाब साफ हो सका। ग्रीष्मऋतु होने और तालाब का पानी कम होने से जलकुंभी निकालने में नगरपालिका ने असर्थता जाहिर कर दी। मगर शहर के समाजसेवियों के दबाव में नपा ने टाल-मटोल करते हुए मंद गति से तालाब की सफाई का काम जारी रखा। आखिर में सहमति इस बात पर बनी की तालाब का सारा पानी खाली करवाया जाए। इसके लिए नपा ने तालाब में पानी की मोटरें डाल कर पानी खाली करना शुरू कर दिया। लगभग पिछले एक माह से मोटरों द्वारा पानी खाली किया जा रहा था, लेकिन अब भी तालाब में पर्याप्त पानी बचा हुआ था।

नगरपालिका के ढीले रवैये से तो यह लग रहा था कि, स्थिति ''नौ दिन चले अढ़ाई कोस'' वाली होकर रह जाएगी। लेकिन अचानक कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने इसमें रूची दिखा दी। कलेक्टर के रूची लेते ही नगरपालिका अपना ढीला रवैया छोड़कर हरकत में आ गई और कलेक्टर के निर्देशों के बाद काम में अचानक ही तेजी आ गई। या यूं कहें कि, कलेक्टर के निर्देशों से नगरपालिका की स्थिति ''मार-मार कर हकीम बनाने'' वाली हो गई। कलेक्टर की रूची और नपा की अरूची बिजली के उस करंट की तरह हो गई जिसके आपस में मिलते ही बंद पड़ी मशीने भी फर्राटे से दौडने लगी। कलेक्टर के हस्तक्षेप के बाद काम में बहुत तेजी तो आ गई, लेकिन अब भी यह संशय बरकरार है कि, इस बार बहादुर सागर तालाब का स्वच्छ और सुंदर दिखाई देने का सपना साकार हो पाएगा...? क्योंकि यह तालाब 68 बीघा में फैला हुआ है, और जितनी मशीनों व वाहनों से यहां काम लिया जा रहा है, वह ''ऊंट के मुंह में जीरा'' है। एक कारण और यह भी कि, मानसून लगभग सिर पर है। अगर बहुत तेज गति से भी काम होता है तो यह संभव नहीं कि, 10-15 दिनों में तालाब से पूरी तरह से गाद साफ की जा सके। इसके अलावा घाटों की सफाई, तालाब की दीवारों पर रंगाई-पुताई तो दूर की कोड़ी ही साबित होगी।

तालाब को एक साल खाली रखना कहां तक उचित...?

इधर मानसून के जल्दी आने की संभावनाएं भी मौसम विभाग जता चुका है। बहादुर सागर तालाब को अपना पुरा स्वरूप दिलवाने की मुहिम में लगे कुछ समाजसेवियों का कहना है कि, वर्षों बाद इस तालाब की साफ-सफाई व सौंदर्यीकरण को लेकर सुनवाई हुई है। तो इसे सिर्फ मानसून के आने से रूकना नहीं चाहिए, वरना स्थिति फिर वही ''ढाक के तीन पात'' हो जाएगी। बहादुर सागर तालाब के जिर्णोद्धार के लिए इस साल तालाब को ना भरा जाकर इसे खाली ही रहने दिया जाए, ताकि इसका पूर्ण कायाकल्प हो सके।

भू-जल स्तर की गिरावट को लेकर इनका कहना है कि, आसपास के क्षेत्र में लगभग 10-11 कुप-बावडियां है, जिन से जलआपुर्ति की जा सकती है। मगर कुछ बुद्धिजीवी लोगों का कहना है कि, तालाब को ना भरना गलत कदम हो सकता है। इससे भूमिगत जल स्तर काफी नीचे चला जाएगा। तालाब के आसपास के ट्युबवेल के सूखने की संभावना बन जाएगी। और जिन 10-11 कुंप-बावडियों का हवाला दिया जा रहा है वह इसी तालाब की वजह से जिंदा है। अगर तालाब में ही पानी नहीं रहेगा तो स्वाभाविक है यह कुप और बावडियां भी सूख जाएंगे और जलसंकट खड़ा हो जाएगा।

दूसरा तकनीकि पहलू यह भी बताया जा रहा है कि, अगर तालाब को एक साल तक खाली रखा गया, तो तालाब से निकलने वाली भूमिगत जलधाराएं बंद हो जाएगी और इस बात की भी कोई गारंटी नहीं कि, एक साल बाद जब यह तालाब भरा जाएगा तो वह भूमिगत जलधाराएं फिर से चालू हो पाएगी...? इससे बेहतर है कि, मानसून के पहले जितना हो सके काम निपटाया जाए और बारिश में तालाब को फिर से भर दिया जाए। ताकि किसी तरह का कोई जलसंकट न खड़ा हो।

कहीं ''नई घोड़ी नया दाम'' की स्थिती न हो जाए

वैसे तो यह पूरा जिला ही आते-जाते अधिकारियों की प्रयोगशाला बनता रहा है। आते-जाते अधिकारी जिले को हमेशा प्रयोगशाला के रूप में ही इस्तेमाल करते रहे है। नित नए अधिकारियों की न जाने कितनी नित नई योजनाएं यह जिला अब तक झेल चुका है। इन योजनाओं में से अब तक कितनी योजनाओं ने इस जिले का उद्धार किया यह अब प्रश्न ही बना हुआ है। अधिकारियों के जाते ही योजनाएं भी गर्त में चली जाती। बहादुर सागर तालाब के सौंदर्यीकरण को लेकर जिस तरह कलेक्टर मिश्रा रूची दिखा रहे है, यह अच्छा है। लेकिन किसे पता कि, इस कार्य के पूर्ण होने से पहले ही उनकी रवानगी इस जिले से हो जाए और बहादुर सागर तालाब के सौंदर्यीकरण का यह सपना अधर में लटक जाए। क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं, अगर ऐसा हुआ तो फिर ''नई घोड़ी नया दाम''। क्योंकि नगरपालिका की तो इच्छाशक्ति है ही नहीं कि, इस तालाब का कायाकल्प हो। इसीलिए यह प्रश्न उठता है कि, कब तक पूरी हो पाएगी बहादुर सागर तालाब को स्वच्छ व सुंदर बनाने की कल्पना...?

कलेक्टर के निर्देशों के बावजूद नपा की आना-कानी

समाजसेवियों की कवायद और कलेक्टर के हस्तक्षेप के बाद बहादुर सागर तालाब पर हो रहे काम में तेजी आई है, लेकिन नगरपालिका इसको लेकर अब भी आनाकानी में लगी हुई है। नगरपालिका अधिकारियों का रवैया ऐसा कि, तालाब पर चल रही मशीनों में डीजल डालने को लेकर समाजसेवियों को बजट न होने का हवाला दे दिया जाता है। मगर विडम्बना यह कि, पिछले वर्षों में नगर के तालाबों के सौंदर्यीकरण के लिए नगरपालिका को जारी हुए करोड़ों रुपयो का कोई अता-पता नहीं है। अगर नगरपालिका चाहे तो उसी फंड से बहादुर सागर तालाब का कायाकल्प हो सकता है। मगर बहादुर सागर तालाब के इस सौंदर्यीकरण कार्य में नपा की आना-कानी नगरपालिका में चल रहे भारी भ्रष्टाचार की तरफ इशारा करती है। तालाब पर चल रहे कार्य में बाधा आने पर समाजसेवी नगरपालिका अधिकारी को फोन करते और नाउम्मीद होकर उन्हे कलेक्टर को फोन करना पड़ता है। कलेक्टर की फटकार के बाद नगरपालिका अधिकारी लाइन में आते और काम आगे बढ़ता। यह रवैया नगरपालिका की उदासीनता और उसकी इच्छाशक्ति को जाहिर करता है।

कार्य को अंधगति से आगे बढ़ाने की जरूरत

जिस गति से बहादुर सागर को साफ करने का काम चल रहा है वह अच्छी बात है, लेकिन समय की मांग इससे कई गुना ज्यादा है। समय यह कह रहा है कि, इस काम को और अधिक अंधगति से किया जाए। बहादुर सागर तालाब से गाद निकालने के लिए मशीनों की संख्या बढ़ाई जाए। समाज सेवी संस्थाएं इस कार्य में तेजी से आगे आकर कदम ताल मिलाए। तालाब से मिट्टी फिकवाने के लिए ट्रेक्टरों की संख्या बढ़ाई जाए। बड़े वाहनों, डम्परों का उपयोग भी बड़ी संख्या में किया जाए। तालाब पर 24 घंटे लगातार काम जारी रहे है। तब ही संभव हो सकता है कि, इस वर्ष तालाब की गाद व मिट्टी साफ हो जाए और बचा हुआ काम जैसे घाटों की मरम्मत, तालाब की दीवारों पर रंगाई पुताई आदि काम आते साल ग्रीष्म काल में तालाब में पानी कम होने पर किया जा सके।

जलसंकट से बचने का यह हो सकता है उपाय

जैसा कि स्थिति सबके सामने है। तालाब का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है और मानसून सिर पर है। तो हो सकता है इस वर्ष तालाब को साफ व गहरा करने का काम पूरा न हो सके। बारिश के बाद तालाब में पानी आना निश्चित है मगर तालाब को खाली रखना भी संभव नहीं है। बीच का एक रास्ता यह हो सकता है कि, मानसून के पहले जितना हो सके काम को निपटाया जाए और बारिश में पानी आने पर तालाब को भरने दिया जाए। तालाब में पानी रहेगा तो जलसंकट की स्थिति पैदा नहीं होगी। बचे हुए काम के लिए आने वाले मार्च माह तक इंतजार किया जाए और मार्च के बाद तालाब के गेट खोलकर उसे वापस खाली कर दिया जाए। इससे होगा यह कि, आगे तालाब के गहरीकरण और साफ-सफाई के लिए लगभग तीन माह का समय मिलेगा, जो कि पर्याप्त समय होगा। इस समय में तालाब की आसानी से साफ-साफाई और गहरीकरण कार्य हो सकेगा वरन् घाटों की मरम्मत और तालाब की दीवारों की रंगाई-पुताई भी संभव हो सकेगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422